

ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मो

मई-2018

विज्ञान और आस्तिकता

प्रकाशन का 20वां वर्ष

₹10



टाटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर (राजस्थान) व गूगनराम एजूकेरान एंड सोशल वेल्फेयर सोसायटी भिवानी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की झलकियां। (विस्तृत विवरण अन्दर के पृष्ठों पर।)



देव ऋषि विद्यापीठ नन्दगढ़ जुलाना जिला जीन्द में श्री राजेश आर्य आर्ट्स का इतिहास विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इसी अवसर पर राजेश आर्य को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए विद्यापीठ के संचालक।



आर्य समाज रूपनगर रोहतक में भजनोपदेश प्रस्तुत करते हुए श्री प्रताप आर्य भजनोदेशक एवं श्री सुखदेव आर्य।



जीन्द शान्तिधर्मी परिसर में आयोजित मासिक पूर्णिमा महोत्सव में यज्ञ करते हुए श्रद्धालु। साथ में नन्हें बालिकाएं जिन्हें हवन के कई मंत्र कंठस्थ हो गए हैं।

आज संसार में जितनी समस्याएँ हैं उनका मूल कारण आध्यात्मिकता का अभाव ही है। भौतिक उन्नति में कोई कमी नहीं दिखाई दे रही है और भौतिक उन्नति कोई दुःख का कारण भी नहीं है। फिर यह दुःखों का कारण क्यों बन रही है। इसीलिए कि इसको आधार प्रदान करने के लिए आध्यात्मिकता नहीं है। आध्यात्मिकता भौतिक उन्नति का अंकुश है। भौतिक उन्नति किसके लिए है? यह इसीलिए है कि मनुष्य का सांसारिक जीवन सुखपूर्ण और संगत हो। अन्ततः पशुत्व और मनुष्य में कुछ तो अन्तर है। कवि ने लिखा था— जीवन गुजर गया तो जीने का ढंग आया। आज तो जीवन गुजरने के बाद भी जीवन समझ में नहीं आ रहा है।

जीवन एक ईश्वरीय वरदान है। भारतीय दर्शन के अनुसार जन्म जन्म के शुभ कर्मों के परिणामस्वरूप यह मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। यह मोक्ष का द्वार है। मनुष्य जीवन में ही आध्यात्मिकता के सर्वोच्च उद्देश्य मोक्ष का द्वार खोजा जा सकता है। अभ्युदय और निःश्रेयस्। अर्थात् सब प्रकार की भौतिक उन्नति और अन्ततः मोक्ष। यह जीवन का उद्देश्य है। केवल सांसारिक उन्नति का नाम अभ्युदय नहीं है। उस सांसारिक उन्नति का नाम अभ्युदय है जो हमारे कल्याण का साधन हो। जो ऐश्वर्य हमारे बंधन का कारण हो, वह अभ्युदय नहीं है। जब निःश्रेयस् अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के उद्देश्य को सामने रखकर अभ्युदय किया जाता है तो वह साधन मात्र होता है, साध्य नहीं होता।

आध्यात्मिकता के बिना न तो व्यक्तिगत उन्नति हो सकती है और न ही सामाजिक। व्यक्तिगत उन्नति का तात्पर्य भोग के साधन इकट्ठा करने से नहीं है। व्यक्तिगत उन्नति का अर्थ है व्यक्तित्व की उन्नति। व्यक्तिगत उन्नति का अर्थ है विवेक। जिसके बिना भोग के साधन बंधन बन जाते हैं, अगर हम ज्यादा गहराई में न जाएँ तो भी स्पष्ट देख सकते हैं कि बहुत से लोग सब कुछ होते हुए भी निर्धन होते हैं। वे धन इकट्ठा करते हैं एक चोर की तरह। कुण्डली मार कर बैठ जाते हैं साँप की तरह। न खाते हैं न खाने देते हैं। जीवन भर धन की पहरेदारी करते हैं और अन्त में सब कुछ दूसरों के लिए छोड़कर मर जाते हैं। तृष्णा फिर भी बनी रहती है।

दूसरी ओर वे लोग हैं जिनके पास कहने के लिए बहुत धन नहीं है पर वे सन्तुष्ट हैं। पुरुषार्थ से कमाते और खाते हैं। फिर लम्बी तानकर सो जाते हैं।

यदि धन कमाकर सन्तुष्ट होने का स्वप्न हम देखते हैं तो यह केवल स्वप्न ही है। क्योंकि आज तक तो कोई इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। सिकन्दर जैसे विश्व विजेता होने का दम्भ भरने वाले लोग खाली हाथ चले गए। आधी दुनिया जीत लेने के बाद भी क्या उसकी शेष दुनिया जीत लेने की तृष्णा समाप्त हो गई! क्या संसार के सर्वाधिक धनी व्यक्ति बिलगेट्स अथवा हमारे देश के अम्बानी आदि की धनार्जन यात्रा पूरी हो गई!

इसका अर्थ धन से वितृष्णा पैदा करना नहीं है। अपितु इसका अर्थ यह है कि सन्तुष्टि का संबंध साधनों से नहीं, अपितु मनःस्थिति से है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण इसी का नाम है। आत्मिक उन्नति का यही अर्थ है कि धन को प्राप्त करके भी उसमें लिप्त न हुआ जाए। वेद में कहा गया है कि हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी हों। इसी में यह रहस्य छुपा हुआ है। वेद में धन के स्वामी होने की बात कही गई है धन का गुलाम होने की नहीं। आज धन की किसको आवश्यकता नहीं है। संसार का सारा ही व्यवहार धन केन्द्रित हो गया है। पर यह भी सत्य है कि धन से सब कुछ अब भी नहीं मिल सकता। संसार में हमारे आत्मीय संबंध हैं, हमारे व्यवहार हैं, और सबसे बढ़कर आनन्दस्रोत परमेश्वर से योग का संबंध है। आनन्द स्रोत प्रभु से संबंध हम लाखों रूपये के भवन बनाकर नहीं जोड़ सकते।

संसार में आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए पग पग पर धन की आवश्यकता है, यह सत्य है पर यह भी सत्य है कि मनुष्य केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही नहीं कमाता। वह इसलिए कमाता है क्योंकि उसे कमाना है। वह कमाए। जीवन में सुख के साधन प्राप्त करने के लिए ही न! यदि सुख के साधन प्राप्त करने के प्रयासों में ही जीवन नरक बन जाए तो इस कमाई का क्या बनेगा? जीवन की तैयारी करते करते आखिर कहीं से तो जीना प्रारम्भ करना पड़ेगा। क्या जीवन की तैयारी करते करते जीवन निकल जाएगा। जीवन की असली कमाई कब शुरू होगी।

आपकी सम्मतियाँ

नमस्ते जी, जैसे ही विद्यालय से आई शान्तिधर्मी का अंक दिखाई दिया, भाग कर उठाया। जल्दी जल्दी मुख्यांश देखे और तभी नजर स्वामी नित्यानन्द जी के भजन पर पड़ी तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा और भजन भी वह जो मैं हमेशा गाती हूँ। (माँ बाप कहाने वालो)

सुदेश आर्या शास्त्री धर्मपत्नी श्री जगदीशचन्द्र
ग्राम पोस्ट चिड़ौद जिला हिसार



मार्च के अंक का सम्पादकीय 'गुरु की टांग' अत्यन्त सारगर्भित, महत्त्वपूर्ण जानकारी के साथ प्रभावी था। नारी का पुरोहित कर्म के अन्तर्गत स्नेहलता जी के पौरोहित्य के बारे में विस्तार से जानकारी मिली, वे धन्यवाद की पात्र हैं। आपकी खोजी पारखी नजर को नमन, जिसमें आपने हमारी आर्यसमाज में महिला के पौरोहित्य में हुए विवाह संस्कार का फोटो देकर सामयिक सूचना के साथ हमारा मान बढ़ाया, तन्निमित्त अनेकानेक धन्यवाद व आभार।

महेश सोनी

प्रधान आर्यसमाज

महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर (राज०)



आपके उत्कृष्ट लेखन, विद्वानों के सुंदर विचार, हर प्रकार से समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आपने जो रूपरेखा पत्रिका की तैयार की है और इसको जनप्रिय बनाया है, इसके लिए आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

आचार्य नन्दकिशोर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र



गतांकों में वैदिक विचारधारा के सारगर्भित लेख, प्रेरणा पथ और अनुशीलन का प्रस्तुतिकरण बहुत अच्छा लगा। मुख पृष्ठ आकर्षक व प्रभावी हैं। गौभक्तों के बलिदान की गाथा पढ़कर हृदय रो उठा। अंग्रेजी सेना संगठित देश भक्तों के आगे टिक नहीं सकी। लेकिन फूट के रोग ने यहाँ भी आ घेरा। शान्तिधर्मी रोचक है, प्रेरक है, विचारपरक है, मार्गदर्शक है, हमारे सब परिवार के लिए यह ऊर्जा का स्रोत है। हम शान्तिधर्मी की अधीरता से प्रतीक्षा करते हैं। इसके परायण के पश्चात ही अन्य कार्य करते हैं।

-अष्टभुजा पाण्डेय

गांव महादेव, पोस्ट बैलघाट, बस्ती (उत्तर प्रदेश)

शान्तिधर्मी का निरन्तर निखरता हुआ स्वरूप, सारगर्भित लेख एवं सुरुचिपूर्ण सामग्री देख/पढ़कर बड़ी प्रसन्नता होती हैं। यहाँ अन्य पाठक भी शान्तिधर्मी से बहुत प्रभावित हैं। अप्रैल अंक में उच्च कोटि की वैचारिक सामग्री समाहित है। राजेशार्य का लेख 'हादसे पर हादसे हैं सावधानी क्या करें' हृदय को झिंझोड़ने वाला है। राजेशार्य के सभी लेख बहुत शोधपूर्ण और सारगर्भित होते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के संबंध में विदेशी लेखिका को लताड़ने वाला डॉ० विवेक आर्य का लेख 'मौके पर चौका' है।

बाबू रामप्रताप कटारिया सीनियर ऑडिटर
ग्रा० पो० पाल्हावास, जिला रेवाड़ी-१२३४०१



शान्तिधर्मी प्रकाशन के बीसवें वर्ष में समस्त सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई। सम्पादक जी को विशेष बधाई, क्योंकि उन्हीं के अथक प्रयास से पत्र में शिक्षा से भरपूर व आज के परिवेश में फैंली कुरीतियों पर सटीक प्रहार करती सामग्री समाहित की जाती है। मैं २००६ से नियमित पाठक हूँ, बीच में कुछ काल के लिए निजी कार्य व्यस्तता के कारण न पढ़ सका लेकिन अब कितना भी जरूरी कार्य क्यों न हो, पत्र के लिए समय अवश्य देता हूँ। शान्तिधर्मी ने मेरे को समय-समय पर जो जानकारी, ज्ञान का बोध कराया है उसके लिए मैं सदैव आभारी रहूँगा। ईश्वर से यही कामना करता हूँ कि पत्र इसी तरह लगातार अच्छी जानकारियाँ देता रहे, जिससे सभी पाठक लाभान्वित हों, मानवता के हितार्थ कार्य करते हुए स्वस्थ समाज का निर्माण करें।

सुभाष आर्य सुपुत्र मास्टर रामकिशन जी

ग्राम कलोई (सुहरा) जिला झज्जर-१२४१०४

सम्मान्य पाठक!

कई बार साधारण डाक से भेजी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ हम तक नहीं पहुंच पाती हैं। आप अपनी सम्मतियाँ, सुझाव, प्रतिक्रियाएँ, आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएँ ई मेल या व्हाट्स एप अथवा पंजीकृत डाक से भेजें। शान्तिधर्मी के वार्षिक व आजीवन सदस्यता शुल्क में रजिस्ट्री का खर्च शामिल नहीं है। यदि आप अपनी पत्रिका पंजीकृत डाक से मंगाना चाहते हैं तो एक वर्ष के लिये २५०/- अतिरिक्त जोड़कर शुल्क जमा करायें। जहाँ १० या अधिक ग्राहक एक स्थान पर रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगाते हैं, उनका रजिस्ट्री खर्च हम वहन करते हैं। आप सहयोग बनाये रखेंगे, प्रार्थना है।

व्हाट्स एप नम्बर : 99963 38552

Email- shantidharmijind@gmail.com



नाती

—लेखक: पं० चमूपति

अग्नि वो वृधन्तमध्वराणां पुरुतमम्।

अच्छा नप्ते सहस्वते॥१॥२१

हम (वः) तुझ (पुरुतमम्) बड़े-से-बड़े जन-समुदाय को (अग्निम्) आगे ले जाने वाले अग्नि-देव की (अच्छ) ओर (आ) प्रवृत्त होते हैं। (अध्वराणाम्) जो अहिंसा आदि व्रतों की (वृधन्तम्) वृद्धि करने वाला है। (सहस्वते नप्ते) जो बल की सन्तति को गिरने नहीं देता, स्थिर रखता है

मनुष्य पशु भी है, देव भी। इसमें दोनों प्रकार की प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। यज्ञ का उद्देश्य पाशविक अंश का सुधार कर उसे दिव्य अंश में परिवर्तित कर देना है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार-अपने उत्कृष्ट-रूप में ये सभी गुण पाशविक हैं, परन्तु यज्ञिय भावनाओं द्वारा इन्हीं का दिव्य संस्कार कर, स्वयं इन्हीं को दिव्य गुण बनाया जा सकता है। काम सन्तानोत्पत्ति का साधन है, क्रोध दुर्व्यवहार के दमन का। लोभ धनोपार्जन का, लोकोपकारार्थ धन इकट्ठा करने का-साधन बनाया जा सकता है। मोह प्रेम में परिवर्तित किया जा सकता है। अहंकार का परिष्कृत रूप आत्माभिमान है जो अनुचित अत्याचार को सहन नहीं कर सकता।

मनुष्यों को आपस में मिला दो। उन्हें सहयोग के जीवन का पाठ पढ़ा दो। वे हिंसक के स्थान में रक्षक हो जाते हैं। इसी वृत्ति को वेद ने 'अध्वर' नाम से पुकारा है। इसी वृत्ति का एक और नाम यज्ञ-वृत्ति है।

यज्ञ का अर्थ है संगतिकरण। केवल मेल ही नहीं, संगति-पूर्वक मेल। संगति अनुकूलता को कहते हैं। जब मनुष्य अकेले से दुकेला होता है, किसी को अपने जीवन का साथी बनाता है तो वह एक प्रकार से प्रतिज्ञा

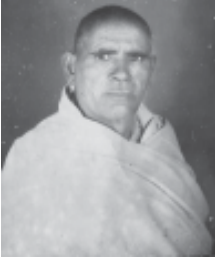
करता है कि वह साथी की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का ध्यान रखेगा। उसके लिए अपनी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं की बलि देगा। यही अध्वर-वृत्ति, एक से अनेक होने की भावना से, अपने आप पैदा होती है। मनुष्य की सामाजिकता इसी एक से अनेक होने में-अधिक से अधिक संख्या की बस्ती बसाने में है। यह अग्नि "पुरुतम" है। जो समझौता दो व्यक्ति एक दूसरे के साथ कर सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं, वही दो सौ, दो हजार, दो लाख, दो करोड़, दो अरब लोगों में हो जाने से ही इस 'अध्वर' की वृद्धि होगी। केवल परिवारों, नगरों, देशों, राष्ट्रों ही को संगठित करने की आवश्यकता नहीं, किन्तु इस यज्ञाग्नि की ज्वालाओं द्वारा सम्पूर्ण मानव-समाज को आच्छादित कर देने से ही मानवीयता की पूरी उन्नति हो सकती है। यज्ञाग्नि इस मार्ग में अग्रणी है। मानव सभ्यता की पराकाष्ठा इसी में है कि वह 'पुरुतम' हो अर्थात् मानव-जाति पर व्यापक।

मानवीयता का बल यज्ञ में है। पाशविक शक्ति का विकास मनुष्यों को बलवान् बनाता है सही, परन्तु बुद्धि बल के सामने शारीरिक बल हार जाता है। बुद्धि-बल भी जब तक एक-एक व्यक्ति ही तक परिमित है, वह

पारस्परिक प्रवंचना के कार्य में लग कर आत्मनाश करता है। एक व्यक्ति की बुद्धि अन्य व्यक्तियों की बुद्धि को मात कर कुछ समय के लिए क्षणिक विजय-सी तो मना सकती है परन्तु इससे कोई स्थायी शक्ति पैदा नहीं हो सकती। स्थायी शक्ति पैदा करने के लिए मानव-जनों के बलों तथा बुद्धियों को सुसंगत करने की आवश्यकता है। संघटन द्वारा ही इनमें स्थिरता पैदा की जा सकती है। शक्ति की शृंखला विच्छिन्न न हो, उसमें सन्तति-भाव पैदा हो जाए। इसके लिए उसे यज्ञ का रूप देना चाहिए।

मानव-समाज बलवान् हो। वह काल के हिचकोलों को सह सके और फिर भी अपनी मानवीयता को स्थिर रखे, उसका बल "नप्ता" हो, न गिरने वाला, सन्तत-इसका साधन एक ही है, "पुरुतम" यज्ञ-मानवों की बड़ी से-बड़ी संख्या को सहयोग के सूत्र में बाँध देना, उसमें प्रेम की, प्यार की, पारस्परिक उपकार की, मानव दया की आग प्रज्वलित कर देना।

हमारा ध्येय उसी विश्वाग्नि ही की ओर जाना है-उसी की ज्वाला बनना है, उसी में आत्माहुति देना है। हमारे समाजों, समुदायों, राष्ट्रों, देशों, सम्प्रदायों, सम्मेलनों-इन सबकी स्थापना का उद्देश्य एक ही है-'पुरुतम' अग्नि। दूसरे शब्दों में विश्व-याग की आग-का प्रदीप्त करना। यही 'सहस्वान्' बलिष्ठ अग्नि है, यही "नप्ता"-न गिरने वाली अमर-अग्नि है। यही आग मनुष्य की वास्तविक बन्धु है; वास्तविक पुत्र-पौत्र, वेद के शब्दों में नाती है। यही उसकी सुकृत की, सुयश की, सुराशक्ति की, वास्तविक सन्तान-न टूटने वाला तार है। मनुष्य इसी आग को पाकर-इसी दिव्य विमान पर चढ़ कर-अमर हो जाता है।



स्वाध्याय को जीवन का अंग बनायें

□ स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्योपदेशक, संस्थापक शांतिधर्मी

स्वाध्याय के प्रति जो उपेक्षा भाव आ गया है, उसे दूर करने की आवश्यकता है। स्वाध्याय से हम न केवल अपने आत्मबल को बढ़ाते हैं, बल्कि एक दैवी परम्परा की रक्षा भी करते हैं।

धार्मिकता को जीवन में उतारने के लिए बुराईयों का त्याग और अच्छाईयों को ग्रहण करना पड़ता है, कहने को तो यह बात छोटी सी लगती है, लेकिन यह एक प्रयत्न साध्य कार्य है। मनुष्य को उठने में देर लगती है, गिरने में देर नहीं लगती। कई बार जरा सी असावधानी से मनुष्य वर्षों की कमाई नष्ट कर देता है। धार्मिकता की कमाई सबसे बड़ी कमाई है। हालाँकि हमारे यहाँ अच्छाई या बुराई को अधिकतर अप्रत्यक्ष स्वर्ग या नरक से जोड़ा जाता है, लेकिन अच्छाई और बुराई का सुख और दुःख के रूप में प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देता है। 'असतो मा सद्गमय' की प्रार्थना की गई है कि प्रभु मुझे बुराईयों से अच्छाईयों की ओर ले चलो। यह प्रभु से प्रार्थना मात्र है जब हम इसके लिए पुरुषार्थ करेंगे तभी असत् से पीछा छूटेगा। सत् का मतलब शाश्वत है, सदा रहने वाला है, बुराई से जो सुख मिलता है, वह काल्पनिक सुख है। चोर भी चोरी करके प्रसन्न होता है, लेकिन बुराई का परिणाम अन्ततः दुःखदायी ही होता है।

संसार की न्याय व्यवस्था में अनेक कमियाँ हैं, कई बार लौकिक न्याय व्यवस्था की कमियों को देखकर आस्थावान् जनों की आस्था हिलने लगती है, लेकिन परमेश्वर की न्याय व्यवस्था में कोई छिद्र नहीं है, ईश्वर के उपासक जो यथार्थद्रष्टा हैं, इस बात को भली भाँति जानते हैं—कि अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनराविशाति।। ईश्वर की व्यवस्था में रंचमात्र भी दोष नहीं होता। वहाँ तो पूरा-पूरा तुलता है।

अच्छाई और बुराई का एक संघर्ष

हमारे भीतर चलता है। बुराईयों पर विजय पाने के लिए आत्मबल की आवश्यकता होती है। यह आत्मबल ईश्वर की उपासना व स्वाध्याय से बढ़ता है। 'य आत्मदा बलदा' जो आत्मज्ञान और आत्मबल देने वाला परमात्मा है, जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है।'

वैदिक मान्यता के अनुसार जीव अनादि है, इसमें अच्छाईयों के भी, बुराईयों के भी अनगिन संस्कार हैं। पुराने संस्कार, नए संस्कारों के नीचे दबते जाते हैं और न जाने कब किन परिस्थितियों में वे फिर उभर सकते हैं। हमें सतत् ऐसी परिस्थिति बनाए रखनी है कि शुभ संस्कार पुष्पित पल्लवित होते रहें। स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान हमारे लिए रक्षक का काम करते हैं। ये हमारे दैनिक कृत्य है, नित्य कर्म हैं। इसको ब्रह्मयज्ञ की संज्ञा दी गई है। जिस प्रकार सांस लेने में हमारे अन्य कामों में बाधा नहीं होती—इसी प्रकार ब्रह्मयज्ञ से भी किसी कार्य में रुकावट नहीं आती।

अब ईश्वर का नाम स्मरण क्या है—इसका तात्पर्य है ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन। जैसे परमात्मा पक्षपातरहित, न्यायकारी, दयालु और अनन्त उपकार करने वाला है, उसी प्रकार हम भी पक्षपात रहित, न्यायकारी बनें। ब्रह्मयज्ञ में हम ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करते हैं, इससे हमारे अन्दर निरभिमानिता, उत्साह और साहस का संचार होता है। स्वाध्याय से हम अपना मूल्यांकन करते हैं और अपने शुभ संस्कारों की रक्षा, प्रोत्साहन करते हैं। आज ये दोनों महत्वपूर्ण कार्य हमारे जीवन से बाहर हो चुके हैं। इसलिए

व्यक्ति जीवन व समाज जीवन में अंधकार ही अंधकार नजर आ रहा है। बच्चों पर पुस्तकों का इतना बोझ है कि अपने पाठ्यक्रम से बाहर की चीजें पढ़ने का समय ही नहीं है। अगर कुछ समय है भी तो टी० वी० और निरुद्देश्य साहित्य पढ़ने के लिए। बड़ों को कमाने से फुरसत नहीं, साहित्य भी इस प्रकार का आ रहा है कि उसमें मनोरंजन के मात्र उद्देश्य को ध्यान में रखकर संस्कारों की अवहेलना की जा रही है। फिल्मों ने तो हर्दें ही पार कर दी हैं।

पुस्तकों को खरीदार नहीं मिल रहे हैं। बड़े-बड़े राष्ट्रीय अखबारों को भी पाठकों को ईनामों का लालच देना पड़ रहा है। पढ़ना ही समाप्त हो रहा है—आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय तो गिने चुने लोगों तक सीमित है। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर की एक पुस्तक एक कबाड़ी वाले के पास मिली— उस पर लिखे हुए नाम से पता चला कि उन सज्जन का देहान्त हो चुका है, उनके सुपुत्र बड़े पदों पर हैं, उन्होंने उनका संग्रहीत साहित्य कबाड़ी को बेच दिया।

स्वाध्याय के प्रति जो उपेक्षा भाव आ गया है, उसे दूर करने की आवश्यकता है। स्वाध्याय से हम न केवल अपने आत्मबल को बढ़ाते हैं, बल्कि एक दैवी परम्परा की रक्षा भी करते हैं। बड़ी आयु के साथियों से (जिनकी थोड़ी रह गई है) निवेदन है कि स्वाध्याय करते समय पौत्रों, पौत्रियों को भगाएँ नहीं, उनको शामिल करें। उनसे चर्चा करें, उनकी स्वाध्याय में रूचि जगाएँ ताकि वे भी आत्मबल की अकूल दौलत पा सकें। ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।

प्रेरणा-पथ

जैसे को तैसा

बहुत पहले जापान के एक द्वीप में बूढ़ों को पहाड़ पर छोड़ने का रिवाज था। जब कोई व्यक्ति बहुत बूढ़ा होकर नकारा हो जाता तो उसका बड़ा बेटा एक किलटे में डालकर पीठ पर उठाकर पहाड़ पर छोड़ आता था। वहां वे भूखे-प्यासे, अधमरी हालत में पड़े रहते और सियार-भेड़िए कौए-गिद्ध वगैरह उन्हें मार-मार खा जाते। यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही थी, इसलिए किसी को कोई अपराध बोध भी नहीं होता था। बूढ़े भी अपनी नियति जानते थे, अतः वे कोई प्रतिवाद नहीं करते थे। उनका बड़ा बेटा जब उन्हें चलने के लिए कहता तो वे जीने की आशा छोड़ चुपचाप उसके पीछे चल देते।

एक बार एक आदमी अपने बूढ़े बाप को किलटे में डालकर पहाड़ पर छोड़ने गया। उसका बेटा जो अभी छोटा ही था, तमाशा देखने उसके साथ हो लिया। उस आदमी ने बाप को किलटे से निकालकर पटका और किलटा वहीं फेंक दिया। रिवाज के अनुसार किलटे को साथ नहीं लाते थे।

वह वापस आने लगा तो देखा कि उसका बेटा पीछे-पीछे किलटा उठाए आ रहा है। उसने कहा- किलटा वहीं गिरा दे। बेटा नहीं माना तो डांटा भी। फिर कहा- 'यह किलटा क्यों उठा लिया, इसे वहीं छोड़ देते हैं, वापस नहीं लाते।'

'बापू जब तू बूढ़ा हो जाएगा, तो तुझे भी यहीं छोड़ना पड़ेगा। तब यह किलटा काम आएगा।' बेटे ने भोलेपन से उत्तर दिया। यह सुनकर उस आदमी का दिल धक् से रह गया। वह पीछे मुड़ा और हताश बैठे अपने पिता को एक बार किलटे में उठाकर घर की ओर चल दिया। यही घटना उस अमानवीय प्रथा की समाप्ति के लिये पहला कदम सिद्ध हुआ।

-सुदर्शन वशिष्ठ

स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के जीवन पर एक और पुस्तक

प्रिय पाठकगण! हरियाणा के प्रमुख साहित्यकार, ५० से अधिक भजन इतिहासों के लेखक, शांतिधर्मी के संस्थापक और १७ वर्ष तक सम्पादक रहे स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक के जीवन और साहित्य की परिचायक एक पुस्तक 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' २०१६ में प्रकाशित हुई थी। अब उनके जीवन और कार्यों पर एक और पुस्तक का सम्पादन हरियाणा के प्रमुख युवा साहित्यकार गुणराम सोसायटी के सचिव, डॉ० नरेश सिहाग बोहल (सम्पादक बोहल शोध मञ्जूषा शोध पत्रिका एवं विधि परामर्शक शांतिधर्मी हिन्दी मासिक) कर रहे हैं। यह एक शोध पुस्तक होगी और ISBN के साथ प्रकाशित होगी। इस पुस्तक के लिए आप पण्डित चन्द्रभानु आर्य के जीवन और कार्यों से सम्बंधित अपने शोधत्मक आलेख/ साहित्यिक विश्लेषणात्मक लेख और उनके जीवन के संबंध में संस्मरणात्मक लेख भेज सकते हैं। कृपया संबंधित सामग्री ईमेल द्वारा या पंजीकृत डाक से ३० जून से पूर्व अधोलिखित किसी पते पर अवश्यमेव भेज दें। स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के साहित्य के लिए आप शांतिधर्मी कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं। सहदेव समर्पित (9416253826) डॉ० नरेश सिहाग (9466532152) shantidharmijind@gmail.com nksihag202@gmail.com

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन



□ भलराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

◆ मानव जीवन की सार्थकता के लिए विचारों की पवित्रता अनिवार्य है।

◆ मनुष्य की श्रेष्ठता की कसौटी यह होनी चाहिए कि उसके द्वारा मानवीय उच्च मूल्यों का निर्वाह कितना हो सका, उनको कितना प्रोत्साहन दे सका।

◆ यदि बिगाड़ को रोकने के लिए हम कुछ नहीं करते,

तो आगामी पीढ़ियाँ इस निष्क्रियता के लिए हमें क्षमा नहीं करेंगीं।

◆ भरोसा रखो कि वह जो एकान्त में तुम्हारी गलतियाँ बताए, तुम्हारा मित्र है, क्योंकि बदले में वह तुम्हारी अरुचि और घृणा पाने का खतरा उठाता है।

◆ चरित्रवान उपदेशक ही परिवर्तन लाने में सफल हो सकते हैं।

◆ आत्मा की तेजस्विता सदाचार से बढ़ती है और बनी रहती है।

◆ जिस समाज में झूठ का बोलबाला जितना अधिक होगा, वह उतना ही पतित और अविकसित होता जाएगा।

◆ सम्मान केवल परमार्थी और सदाचारी लोगों के लिए सुरक्षित रहना चाहिए।

◆ प्रशंसा से पिघलना नहीं चाहिए, आलोचना से उबलना नहीं चाहिए।

◆ निःस्वार्थ भाव से कर्म करते रहें, क्योंकि इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा



वीर तुम्हें शतबार नमन

□ स्व० राधेश्याम आर्य

क्रान्ति ज्योति नूतन बिखरायी,
स्वतंत्रता की अलख जगायी,
'स्वातंत्र्य वीर सावरकर' तुमने-
अंग्रेजों की नींद उड़ायी।
शौर्य-शक्ति पर अहे! तुम्हारी-
मुग्ध हुआ था कोटिक अभिमान।
वीर तुम्हें शत बार नमन॥

कीर्ति तुम्हारी अमर रहेगी,
जन-जन में उत्साह भरेगी,
लेकर नव आलोक धरा पर-
स्वतंत्रता की ज्योति जगेगी,
वसुन्धरा का जाग्रत होगा-
तेरी ललकारों से कन-कन
वीर तुम्हें शत बार नमन॥

लक्ष्यहीन जीवन

लक्ष्यहीन जीवन भटकन है, अन्तहीन भटकन है।
राह अनिश्चित, चाल अनिश्चित, दिशाविहीन गमन है॥
लघु घन शावक-वायु बवण्डर में परवश बेचारा।
विस्तृत नभ में यत्र तत्र ज्यों फिरता मारा मारा॥
त्यों अथाह संसृति सागर की तुंग तरंग विषैली-
में जीवन नौका को छोड़ा नाविक रहित अकेली॥
तो तूफां की विषम परिस्थिति में निश्चित डूबन है।
बेसुध रहकर जिये बहुत से जीवन संसृति वन में।
कई योनियाँ अदली-बदली बेहोशी उलझन में॥
विकृतिमय, तमपूर्ण, विषम-पथ, विकट कटक षटरिपु का।
संग लिये, अपनाये परवश जीवन जिये पशु का॥
अब जागो निज को पहिचानो, स्ववश हुए अमन है।
यदि पाना है पार, ज्योतिमय-वेदमार्ग-अपनाओ।
महामहिम-ऋषि मनीषियों के पद चिहनों पर जाओ।
साहसमय संकल्प, अथक श्रमबल का आलम्बन लो।
रिशतों के ताने-बाने को वसुधा में फैला लो॥
व्यवहारिक आदर्श तय करो, जिओ, यही जीवन है।

भारत माँ के तुम सपूत थे,
क्रान्ति यज्ञ के अग्रदूत थे,
त्याग तथा बलिदान समन्वित-
पावनता से तपः पूत थे।
मातृभूमि को आन्दोलित कर-
भरा तुम्हीं ने नव स्पन्दन।
वीर तुम्हें शत बार नमन॥

अन्दमान की भू से पूछो,
भारत के कण-कण से पूछो,
कैसे तैरा महासिन्धु में-
भूमि मध्य सागर से पूछो।
कौन तपस्वी, महाबली था-
साहस की प्रतिमूर्ति अप्रमन।
वीर तुम्हें शत बार नमन॥

□ दयाशंकर गोयल



शुचिवन्दन

□ डॉ० गणेशदत्त सारस्वत

सर पर बांध कफन जो निकले,
आजादी के दीवाने बन।
ऐसे अमर शहीदों का हम-
आओ, आज करें शुचिवन्दन!!
नहीं किसी से कभी डरे जो।
देश-प्रेम से रहे भरे जो।
गोलों की बौछारों में भी-
सीना तान सदैव बढ़े जो।
मातृभूमि के लिए जिये जो-
मरकर भी महके बन चंदन।
ऐसे अमर शहीदों का हम-
आओ, आज करें शुचिवन्दन!!
लिये तिरंगा चले झूमते।
कभी न देखे गए ऊँघते।
हँस-हँस कर फाँसी के फंदे
होड़ लगाकर जो कि चूमते।

जिनका केवल एक स्वप्न था-
तड़-तड़ टूटें माँ के बन्धन।
ऐसे अमर शहीदों का हम-
आओ, आज करें शुचिवन्दन!!
अमर हो गए शूली पर चढ़
कभी न झिझके, रहे सदा दृढ़।
भारत माता की जय-जय कह-
अन्यायों का तोड़ दिया गढ़।

नया सबेरा ले आने को-
हुआ निछावर जिनका जीवन।
ऐसे अमर शहीदों का हम-
आओ, आज करें शुभिवन्दन!!

-सारस्वत सदन

सिविल लाइन्स, सीतापुर-२६१००१



विज्ञान और आस्तिकता

□ वेद्य राजेन्द्र आर्य बल्हारपुर (09822723162)

जिस तरह संसार में जड़ और चेतन ऐसे दो पदार्थ मौजूद हैं, उसी तरह से मनुष्यों में भी आस्तिक और नास्तिक ऐसी दो विपरीत विचारधाराओं वाले लोग मौजूद हैं। इनमें आस्तिक वह है जो जड़ प्रकृति के साथ ही पिंड और ब्रह्माण्ड में आत्मा और परमात्मा की सत्ता को स्वीकार करता है। और नास्तिक वह है जो चेतना को तो स्वीकार करता है, किंतु चेतना के मूलभूत कारण आत्म और परमात्म तत्त्व से सर्वथा इंकार करता है। वह जड़ प्रकृति को ही सब कुछ मानता है। उसकी भौतिकवादी विचारधारा होने से वह प्रत्यक्ष प्रमाण के अलावा अन्य किसी भी प्रमाण को मानने से सर्वथा इनकार करता है। वहीं आस्तिकवादी प्रत्यक्ष के साथ ही अनुमान प्रमाण तथा शब्द प्रमाण को भी मानता है। नास्तिक इहलोक माने इसी जीवन को सब कुछ मानता है और मौज, मजा, सुख संतुष्टि से जीवन यापन में विश्वास करता है। वहीं आस्तिक वर्तमान, भूत, भविष्य माने पूर्व और पुनर्जन्म पर विश्वास करके पाप पुण्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान माने इहलोक के साथ ही परलोक को भी सुधारने की सोच रखता है।

हमारे यहाँ मध्यकाल में चार्वाक नाम के एक नास्तिक हुए हैं। उन्होंने अपने नास्तिक सिद्धांतों को बड़ी ही कुशलता से जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। इन्हें चार्वाक के नाम से इसलिए भी जाना जाता है क्योंकि चार्वाक का अर्थ होता है बोलने में चतुर माने वाक्पटु। चार्वाक की तरह ही हमारे यहाँ कुछ और भी लोग हुए हैं, जिन्होंने नास्तिक विचारधारा का प्रचार प्रसार किया है। नास्तिकों के मत को वर्तमान भौतिक विज्ञान ने भी काफी सहारा दिया है। आज वैज्ञानिकों ने बेहद चमत्कारिक तथा कल्पना से परे के ऐसे-ऐसे यंत्रों का निर्माण किया है कि बुद्धि चकरा जाती है। एक जगह बैठे बैठे ही उन्होंने हजारों प्रकाश वर्ष दूर के ग्रह नक्षत्रों का फोटो लिया है। लाखों मील दूर के मंगल, गुरु पर भेजे यान का लाखों मील दूर से संचालन किया है। स्त्री के गर्भ से बाहर टेस्ट ट्यूब में भ्रूण को विकसित कर शिशु को जन्म दिया है। एक पशु के क्लोन से संपूर्ण शरीर की रचना करने का दावा भी कर रहे हैं। इन तथा ऐसे तमाम आविष्कारों ने

“विज्ञान एक सृष्टिकर्ता की सत्ता का स्पष्ट रूप में प्रतिपादन करता है। हमें विज्ञान उस नियामक शक्ति में पूर्ण विश्वास के लिए बाधित करता है।”

नास्तिकों में काफी उत्साह का संचार किया है तथा उनके विचारों को भी काफी बल मिला है। इसलिए अब वे कहने लगे हैं कि विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि करने कराने वाला सब मनुष्य ही है, फिर भगवान, ईश्वर जैसी काल्पनिक गण्यों को क्यों मानें? इस तरह से, दृष्टि से दिखाई देने वाली स्थूल वस्तुओं को प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में स्वीकार कर वे अपना समाधान कर लेते हैं तथा अन्यों को भी उसी राह पर चलने का परामर्श देते हैं।

अब यहाँ सवाल उठता है कि जिस विज्ञान और वैज्ञानिकों को वे सब कुछ मान रहे हैं और ईश्वरीय सत्ता से इंकार कर रहे हैं, क्या उन वैज्ञानिकों ने भी ईश्वरीय सत्ता से कभी इंकार किया है? देखिए वर्तमान विज्ञान के पितामह सर आईजैक न्यूटन ने पेड़ से टूटकर फल को भूमि पर गिरते हुए देखा तो आप खोज में जुट गये और प्रकृति में मौजूद गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत को खोज निकाला। तब उन्होंने और दुनिया ने यही कहा कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण मौजूद है, जिसे खोज लिया गया है। किसी ने भी यह नहीं कहा की गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत के निर्माता न्यूटन हैं। वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड में मौजूद सिद्धांतों व नियमों की केवल खोज करते हैं और उन नियमों को आधार बनाकर नये आविष्कार करते हैं। क्योंकि खोज और आविष्कार का आधार स्तंभ नियम है। चूंकि वैज्ञानिक बुद्धिमान होते हैं और सूक्ष्मदर्शी भी, अतः वे जानते हैं कि नियम कभी स्वयमेव नहीं बनते। नियम को बनाना पड़ता है और नियम बनाने में ज्ञान के साथ ही बुद्धि की भी आवश्यकता होती है।

जब वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड के कण-कण को एक अदृश्य नियम में बंधा हुआ देखते हैं तब वे ब्रह्माण्ड के नियम निर्माता की कृति से इतने अभिभूत और गद्गद् हो जाते हैं कि उनके हृदय के भाव शब्दों के रूप में प्रकट होने लगते हैं। न्यूटन महोदय ने अपने ज्योतिष विषयक Principal नामक ग्रंथ में लिखा है कि ‘All this material universe is the handiwork of the omniscient

omnipotent creator' अर्थात् यह सारा भौतिक जगत एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की रचना है।

अपने समय के सबसे बड़े वैज्ञानिक और रॉयल सोसायटी तथा ब्रिटिश एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस के प्रधान 'सर ऑलीवर लॉज' महोदय ने अपने एक निबंध में लिखा है 'We are deaf and dumb to the infinity grandeur around us unless we have confidence in a directive power in an influence other than physical and electric force' (Quoted in science and religion by seven men of science p.43) अर्थात् विज्ञान एक सृष्टिकर्ता की सत्ता का स्पष्ट रूप में प्रतिपादन करता है। हमें विज्ञान उस नियामक शक्ति में पूर्ण विश्वास के लिए बाधित करता है, जो भौतिक और वैद्युतिक शक्तियों से भिन्न है।

मि० लुई पाश्चर नामक वैज्ञानिक का प्रातःस्मरणीय वाक्य- 'Posterity will one day laugh at the foolishness of the modern materialistic philosophers' the more I study nature the more I stand amazed at the work of the creator. अर्थात् आगे आने वाली संतति आधुनिक प्रकृतिवादी दार्शनिकों की मूर्खता पर हँसेगी। जितना अधिक मैं प्रकृति का अध्ययन करता हूँ उतना ही परमेश्वर के कार्यों को देखकर आश्चर्यचकित होता हूँ। जगद्विख्यात महान आविष्कारक मि० थॉमस एडिसन ने तो यहाँ तक कह डाला कि 'मैं रसायन विज्ञान द्वारा ईश्वर की सत्ता को स्वीकार कर सकता हूँ तथा कोई भी व्यक्ति प्रकृति के रहस्यों और रसायन शास्त्र का अध्ययन यह विश्वास धारण किए बिना नहीं कर सकता कि इन सबके पीछे एक सर्वोच्च शक्ति कार्य कर रही है। मैं इस बात को गणित के समान स्पष्टतया प्रदर्शित कर सकता हूँ। एक बात निश्चय है कि विश्व में बुद्धि व्याप्त है।' कुछ इसी तरह से 'डाक्टर मास्टर मैन' 'डाक्टर मूर' जगत् विख्यात वैज्ञानिक आईस्टीन जैसे भौतिक विज्ञान से जुड़े छोटे से लेकर महाधुरंधर वैज्ञानिकों तक ने ईश्वर को स्वीकार किया है। 'डाक्टर पाल केंस' ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'The religion of science' अर्थात् 'विज्ञान का धर्म' में स्पष्ट लिखा कि 'The religion of science is not atheistic But theistic God determines the laws of any possible kind of nature. God is that which determines the shape of nature and directs the course of energy' अर्थात् विज्ञान का धर्म नास्तिक या

निरीश्वरवादी नहीं, अपितु ईश्वरवादी है। परमेश्वर प्रकृति के नियमों और रूप का नियामक है और वही शक्ति के प्रकार का प्रेरक है।

जो वैज्ञानिक भौतिक विकासवाद को मानते हैं वे भी ईश्वर की सत्ता से इंकार नहीं करते। बल्कि 'हेनरी डॉयमंड' जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक कहते हैं कि "Evolution shows God every where. (Is modern intelligence outgrowing God?) अर्थात् विकास सर्वत्र ईश्वर को प्रदर्शित व सिद्ध करता है।

विश्व के छोटे बड़े वैज्ञानिक इस बात पर एक मत हैं कि प्रकृति के हर घटक में नियमबद्धता व सुव्यवस्था एक साथ मौजूद हैं। यदि इनमें से किसी एक का भी अभाव हो जाय या अव्यवस्था का निर्माण हो जाय तो खोज और आविष्कार कभी सफल न हों।

वैज्ञानिक बखूबी यह जानते हैं कि नियम और व्यवस्था स्वयं निर्माण नहीं होते, इनका निर्माण बुद्धि के द्वारा ही होता है। पंच महाभूतों का प्रत्येक घटक पूर्णतः जड़ होने से इनके संघात से निर्माण हुए किसी भी पदार्थ में चेतना और बुद्धि का नितांत अभाव ही रहेगा। चूंकि सृष्टि में जड़ और चेतन इन दोनों का अस्तित्व मौजूद है। ऐसे में यही तथ्य उभरकर सामने आता है कि सृष्टि में मौजूद चेतना और नियमबद्धता, यह जड़ प्रकृति की ओर से या प्रकृति का गुण कदापि नहीं हो सकता।

नास्तिकगण अपने विचारों को पुख्ता करने हेतु जब टेस्ट ट्यूब बेबी का उदाहरण देते हैं कि अब मानव की उत्पत्ति मशीन से होने लगी है, तब वे यह भूल जाते हैं कि टेस्ट ट्यूब में जीवित स्त्री पुरुष से रजः और वीर्य लेकर गर्भ धारण के नियम एवं पोषण के नियमांतर्गत ही ट्यूब में बालक का विकास किया जाता है। चेतन के संयोग के बिना यह नव निर्माण संभव नहीं है।

ईश्वरीय सत्ता से इंकार करने वालों को पृथ्वी की निर्माण प्रक्रिया भी मात्र एक दुर्घटना प्रतीत होती है कि एक गुजरते हुए बड़े तारे से आकर्षण से सूर्य का कुछ भाग टूट कर अंतरिक्ष में बिखर गया, फिर कालांतर में उन छोटे बड़े अवशेषों से पृथ्वी और तमाम उपग्रह बन गये और अपनी अपनी धुरी पर घुमते हुए स्वयं ही अपनी अपनी कक्षा में स्थानापन्न हो गये। नास्तिकों को अकस्मात् सी लगने वाली यह घटना भले साधारण सी हो किंतु सूक्ष्म दृष्टिकोण से अध्ययन करने पर इस घटना के पीछे एक सुव्यवस्थित योजना का आभास होता है। क्योंकि हमारा सदा का अनुभव रहा है कि दुर्घटना छोटी हो या बड़ी, सदा विध्वंसकारी ही

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द : कुछ अनछुए प्रसंग

रौलेट एक्ट और स्वामी श्रद्धानन्द

□डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ drvivekarya@yahoo.com

स्वामी श्रद्धानन्द के विषय में विपुल साहित्य की रचना हुई है। उसमें स्वामीजी के क्रांतिकारी जीवन और विराट् व्यक्तित्व के विषय में प्रभूत जानकारी प्राप्त होती है। इधर आर्यजगत् के अग्रणी लेखक डॉ० विवेक आर्य ने वर्षों के परिश्रम के बाद स्वामीजी के विषय में कुछ नवीन तथ्य खोज निकाले हैं, जो पाठकों के लिए अज्ञात या अल्पज्ञात ही होंगे। ये तथ्य शान्तिधर्मी के आगामी कुछ अंकों में लेखमाला के रूप में प्रकाशित होंगे। विषय विशेषज्ञों से विमर्श के पश्चात् इन्हें व्यवस्थित रूप से पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जायेगा। -सम्पादक

१९१९ का वर्ष भारतीय राजनीति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अंग्रेजों द्वारा 'रौलेट एक्ट' लागू किया गया, जिसे काला कानून भी कहा जाता है। उनका मानना था कि प्रथम विश्व-युद्ध के समय कुछ भारतीयों ने सरकार के विरुद्ध गतिविधियों में भाग लिया था। यह कानून ऐसी गतिविधियों में भाग लेने वालों पर अंकुश लगाने के लिए बनाया गया था। इसके तहत किसी को गिरफ्तार कर जेल भेजने की खुली छूट, दो वर्ष तक बिना सुनवाई के भी जेल में रखने, प्रेस पर भी कठोरता से नियंत्रण का प्रावधान था। प्रेस आरोपी को जेल में रखे जाने की कोई समय सीमा नहीं थी। बिना वारंट गिरफ्तारी व आरोपी के कैमरा ट्रायल का विधान था। जेल से रिहाई पर आरोपी द्वारा जमानत राशि जमा कराने और यह शपथ पत्र दाखिल करने की बाध्यता थी कि वह किसी भी राजनीतिक, शैक्षिक अथवा धार्मिक गतिविधि में भाग नहीं लेगा। संक्षेप में कहें तो यह कानून 'न दलील, न वकील, न अपील का काला कानून' था।

महात्मा गाँधी उस समय राष्ट्रीय फलक पर उभरता हुआ व्यक्तित्व थे। उन्होंने इस कानून के विरोध में आंदोलन आरम्भ कर दिया। उनके आंदोलन से डॉ० सत्यपाल, डॉ० सैफुद्दीन किचलू, डॉ० अंसारी और हमारे चरित्र नायक स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अनेक प्रबुद्ध चिंतक जुड़ गए। पंजाब क्षेत्र में इस कानून के विरोध में विशेष आक्रोश था। वहाँ पर दौरा कर रहे डॉ० सत्यपाल और डॉ० सैफुद्दीन किचलू को गिरफ्तार कर धर्मशाला ले जाकर नजरबंद कर दिया गया। सेना तैनात कर दी गई और कठोर धाराएं विशेषज्ञों के रूप में लागू कर दी गईं। इसी दौरान अप्रैल १३, १९१९ को अमृतसर के जलियांवाला बाग में बैसाखी के अवसर पर इकट्ठा हुए निरपराध लोगों पर जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलीबारी कर स्तरजित कांड को अंजाम दिया था।

इस एक्ट के विरुद्ध हुए आन्दोलन में आर्यसमाज के नेता और गुरुकुलीय शिक्षा के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द

जी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धुमकेतु की तरह चमके थे। स्वामीजी के जीवन की इस महत्वपूर्ण घटना का हम यहाँ पर विस्तृत वर्णन देना चाहेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द का ४ मार्च को अकस्मात् ही इस आंदोलन से जुड़ना हुआ। उनका महात्मा गाँधी से रौलेट कानून को लेकर संवाद हुआ।

७ मार्च को स्वामीजी ने कांग्रेस के मंच से प्रथम बार सार्वजनिक भाषण दिया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि अगर रौलेट कानून लागू हो गया तो जनता CID के रहमो करम पर आश्रित हो जायेगी। तब स्वराज एक कल्पना भर रह जायेगा। १० से २१ मार्च एक स्वामीजी बम्बई, सूरत, भरूच, अहमदाबाद और सूरत में रौलेट कानून के विरोध में जनसभाओं को सम्बोधित करते मिलते हैं। २२ मार्च को स्वामीजी दिल्ली लौटते हैं तो देखते हैं कि आंदोलन ठंडा पड़ रहा है।

२४ मार्च को कुछ उत्तेजना के साथ स्वामीजी का भाषण हुआ। स्वामी जी ने एक काल्पनिक चित्रण करते हुए अपने भाषण में कहा- सोचिये, भारत के प्रधानमंत्री को इस काले कानून के अंतर्गत निरपराध होते हुए केवल शक की बिनाह पर गिरफ्तार कर लिया जाये और न उन्हें वकील की सहायता मिले, न अपील करने का अधिकार मिले! क्या आप ऐसा कानून चाहेंगे?

२७ मार्च को अपने भाषण में स्वामीजी ने कहा कि अगर रौलेट कानून लागू हो गया तो कोई भी धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक संस्था कार्य नहीं कर पायेगी।

२९ मार्च को उन्होंने अपने भाषण में हड़ताल का समर्थन करते हुए कहा- अगर हड़ताल में ट्राम भाग न लें तो उनका सार्वजनिक बहिष्कार कर दिया जाये। अगर सिनेमा आदि खुले तो कोई उसे देखने न जाये। अगर सरकारी सिपाही सत्याग्रह को रोकने का प्रयास करें तो कोई उनकी आज्ञा का पालन न करे। सभी अपने जीवन को कठोरता से

जीना आरम्भ कर दें- जैसा जेल के कैदियों का होता है क्योंकि कभी भी जेल जाना पड़ सकता है।

३० मार्च १९१९ स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का अविस्मरणीय दिन था। स्वामीजी का कद इस दिन एक समाज सुधारक से एक प्रभावशाली राष्ट्रवादी नेता के रूप में स्थापित हुआ। उस दिन सार्वजनिक हड़ताल थी। एक मिठाईवाले और सत्याग्रहियों के मध्य दुकान खुलने को लेकर विवाद हो गया। उस समय गोलीबारी में कुछ लोग घायल भी हो गए। भागती हुई भीड़ चांदनी चौक के घंटाघर की ओर बढ़ने लगी। घंटाघर पर फिर से दंगा हुआ। पुलिस की गोलीबारी में ५ लोगों की मृत्यु हुई और अनेक घायल हुए। स्वामी श्रद्धानन्द इस समूह को पीपल पार्क में ले गए और सम्बोधित किया। वहाँ से लौटते हुए क्या हुआ- स्वामी जी के शब्दों में जानिए- (स्वामीजी द्वारा स्वलिखित यह घटना मराठा अखबार, ६ अप्रैल, १९१९, में छपी थी।)

‘मैंने विशाल जनसमूह को शांत रहकर घर लौटते हुए मेरे पीछे चलने का आग्रह किया। हम सभी शांत रूप में जा रहे थे। जब हम घंटाघर के निकट पहुंचे तब देखा कि गुरखे सिपाही सड़क के बीचो-बीच दोनों ओर मुख कर खड़े हुए थे। हमें देखकर वे कुछ दाएं सरक गए। हमने सोचा कि उन्होंने हमारे जाने के लिए बाएं से रास्ता छोड़ा है। पर जब हम उनके निकट पहुंचे तो उन्होंने भीड़ पर एक गोली चलाई। इससे भीड़ में उत्तेजना फैल गई और समूह तीतर बितर हो गया। पर मैंने भीड़ को शांत होने का इशारा किया। मैं अपने संन्यासी के भेष में अकेला गोरखा सिपाहियों के समीप गया और मैंने उनसे पूछा कि आप क्यों निर्दोष और शांतिप्रिय भीड़ पर गोलीबारी कर रहे हैं? तभी बंदूकें मेरे ऊपर तान कर सिपाही बोले- तुम को छेदेंगे। मैं शांत रहा और मैंने कहा- मैं खड़ा हूँ। गोली चलाओ। उसी समय मेरी छाती के ऊपर ८ से १० बंदूकें तन गईं। यह देखकर भीड़ आपे से बाहर हो गई। तभी मैंने उन्हें हाथ दिखाकर और बोलकर शांत किया। पर भीड़ चिल्लाये जा रही थी। हमें मरने दीजिये, पर आपको कुछ नहीं होने देंगे। मेरी छाती पर बंदूक ताने कुछ ३ मिनट हुए थे कि तभी एक गोरा अफसर घोड़े पर बैठ कर वहाँ आया। मैंने उसे इस हरकत को अंकित करने के लिये कहा। सभी बंदूकें एकदम से नीचे झुक गईं। मेरे सामने उस गोरे अफसर ने पुलिस वाले से पूछा कि क्या तुमने गोली चलाने का आदेश दिया था? पुलिस वाले ने इंकार किया। मैंने आगे बढ़कर गोरे अफसर से पूछा कि क्या आपने गोली चलने की आवाज सुनी है? उसने कहा कि वह यही तहकीकात करने आया था। मैं तब भीड़ के साथ वहाँ से प्रस्थान करने लगा। तभी

एक गोरखा सिपाही आया और अपनी खुखरी को दो बार मेरे सामने हवा में घुमाया, पर कोई प्रतिक्रिया न होते देख वह खिसक गया। उस समय गाड़ी पर मशीनगन लेकर एक सिपाही भीड़ के लगातार चक्कर लगा रहा था और उस सिपाही की अंगुली हर समय बन्दूक पर थी। भीड़ न तो उत्तेजित हुई और न ही झुकी।’

ध्यान दीजिये- तत्कालीन CID रिपोर्ट में गोरखा सिपाहियों के व्यवहार के विषय में कुछ भी आलोचनात्मक नहीं रिपोर्ट किया गया था। कुछ दिन बाद जब स्वामीजी का यह लेख मराठा अखबार में छपा तब एक तहकीकात समिति इस घटना के लिए नियुक्त हुई। अंग्रेज अफसरों ने आंतरिक जाँच में पूछा कि CID द्वारा इतनी बड़ी घटना की विस्तार से रिपोर्ट क्यों नहीं भेजी गई।

जाँच समिति ने अपनी टिप्पणी के रूप में यह लिखा- ‘स्वामी श्रद्धानन्द का कथन है कि उनके निर्देशन में ४०००० लोग जमा थे। जो लोग जमा थे, वे सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन करने वाले थे, इसलिए दंगा-फसाद नहीं हुआ और अंत तक शांति कायम रही। ये एक सच्चे संन्यासी के शब्द हैं, जो सरकार और जनता दोनों का समान रूप से हित देखता है; इसलिए उनके कथन में अविश्वास करने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता।’

अंत में तहकीकात समिति ने इस घटना का निष्कर्ष यह निकाला कि सिपाहियों का रवैया एक हथोड़े से एक मक्खी को कुचलने के जैसा था।

३१ मार्च को स्वामीजी ने सत्याग्रह में शहीद हुए मृतकों की शव यात्रा में भाग लिया। १ अप्रैल को स्वामीजी ने हड़ताल खोलने का आह्वान किया एवं घंटाघर के नजदीक एकत्र हुए लोगों को घर जाने का निर्देश दिया। ३ अप्रैल को सत्याग्रह में घायल एक मृतक की शवयात्रा निकली। स्वामीजी इस शवयात्रा में शामिल हुए। जब यह शवयात्रा गुरुद्वारा शीशगंज पहुंची तो इसे रोका गया। स्वामीजी ने भीड़ को सम्बोधित किया। उन्होंने शहीद मृतक की तुलना गुरु तेगबहादुर द्वारा दिए गए बलिदान से करते हुए कहा कि स्वराज प्राप्त करने के लिए ऐसे बलिदानों की आज अत्यंत आवश्यकता है। शव यात्रा में अर्थी को हिन्दू और मुसलमान दोनों ने कन्धा दिया था। स्वामीजी ने इस मेलमिलाप पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए सरकारी ट्राम और सामान का बहिष्कार करने का आह्वान किया।

४ अप्रैल को फिर से एक ऐतिहासिक दिन आया। अब्दुल मजीद के नाम से एक राष्ट्रवादी मुसलमान ने स्वामीजी को जामा मस्जिद में सम्बोधन के लिए आमंत्रित किया। श्रोताओं में अधिकतर मुसलमान थे। स्वामीजी ने



कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष

मुकाबर पर खड़े होकर अपना सम्बोधन वेद मंत्र से प्रारम्भ किया। उन्होंने विदेशियों द्वारा बच्चों और युवाओं पर अत्याचार का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि अगर दिल्ली की आधी जनसंख्या को भी ४०-४५ लोगों के स्थान पर अपना बलिदान देना पड़े तो भी मृत्यु का कोई भय नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा- कई बलिदानियों के खून ने हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य हुए मेल मिलाप को स्थिरता प्रदान की है। यह भाषण भारत के इतिहास का एक अविस्मरणीय भाषण था। एक भगवा कपड़ों में सुशोभित संन्यासी द्वारा दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद से हिन्दू मुस्लिम एकता का आह्वान करना निश्चित रूप से नए दौर का आगमन था।

५ अप्रैल को स्वामीजी द्वारा सत्याग्रह के नेताओं से भेंट कर चर्चा करने का विवरण मिलता है। ६ अप्रैल को स्वामीजी को प्रातः फतेहपुरी मस्जिद और दोपहर को किंग एडवर्ड पार्क में आमंत्रित किया गया। फतेहपुरी मस्जिद के भाषण में स्वामी जी बोलते हैं- 'यह गुलामी हमारे हृदय में शूल के समान है। यह गुलामी हमारे कानों में सदा गूँजती रहती है। हे हिन्दू और मुसलमानों के परम पिता! निरपराध हिन्दू और मुसलमानों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। हे सृष्टि के निर्माणकर्ता ईश्वर! हम सब आपके ऊपर निर्भर हैं। आज हम यहाँ पर आपसे मानसिक शांति की प्रार्थना हेतु एकत्र हुए हैं जो अपने ही निरपराध भाइयों की हत्या हो जाने से व्यथित हैं। हमारे हृदयों को सात्वना दीजिये और हमारे मध्य एकता स्थापित कीजिये। हमें धीरज दीजिये, हमारी रक्षा कीजिये, ताकि हम अपनों का खून देखकर विचलित न हों। हम आपको धन्यवाद दें कि आपने निरपराधों को अपना बलिदान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने बलिदान से दुनिया को बचा लिया। जो कुछ वहाँ हुआ,

छुपा नहीं है। हमें शक्ति दीजिये कि हम सांसारिक भोगों से बचे रहें। हम सरकारी शक्तियों से आतंकित न हों और बलिदानियों के प्रति संवेदनशील रहें। हम देश की प्रगति और स्वतंत्रता के लिए अपनी आहुति देने के लिए तत्पर रहें। हमें यह शक्ति दीजिये। हम ३२ करोड़ भारतवासियों को ६४ करोड़ के बराबर शक्ति दीजिये ताकि हम सांसारिक दुःखों को झेल सकें और शांति व अभय का साम्राज्य स्थापित हो।'

एडवर्ड पार्क और दरियागंज में भाषण देते हुए स्वामीजी ने कहा कि दिल्ली में भारी मशीनगन और भारी संख्या में तैनात सेना अशांति फैलाने वाली है। उन्होंने आपसी विवादों को सुलझाने के लिए कोर्ट जाने के स्थान पर स्थानीय पंचायत में ही विवाद सुलझाने का आग्रह किया।

७ अप्रैल को स्वामीजी एक हिन्दू सत्याग्रही की शवयात्रा में शामिल हुए। उन्होंने बलिदान का गुणगान करते हुए कहा कि जो युद्ध में अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं करते, वे अधम हैं। उन्होंने बलिदानी की प्रशंसा करते हुए कहा कि वीरगति को प्राप्त हुआ युवक प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होने के लिए दो बार अपने घर से भाग गया था। युवक ने अपने प्राण जिस सरकार के लिए प्रस्तुत कर दिए थे। उसी सरकार ने उसके प्राण गोली मारकर हर लिए।

९ अप्रैल को स्वामीजी को गुप्त सूचना मिली कि महात्मा गाँधी रेल से दिल्ली आ रहे हैं। वे ४० साथियों के साथ स्वामीजी को लेने रेलवे स्टेशन गए, परन्तु स्वामी जी नहीं पहुँचे। महात्मा गाँधी को पलवल में गुप्त रूप से गिरफ्तार कर दिल्ली प्रवेश से रोक दिया गया। सत्याग्रह की कमान स्वामी जी के हाथों में थी।

१० अप्रैल को स्वामीजी ने सार्वजनिक सभा में महात्मा गाँधी की गिरफ्तारी का विरोध किया। उन्होंने महात्मा गाँधी का सार्वजनिक सन्देश पढ़ा और लोगों को जेल भरने का आह्वान किया। शाम को उन्होंने गाँधीजी की गिरफ्तारी के विरोध में एकत्र हुई भीड़ को सम्बोधित किया और यह आह्वान किया कि जब तक रौलेट कानून निरस्त नहीं होता सभी गाँधी जी के बताये मार्ग पर चलें।

११ अप्रैल को स्वामीजी ने पटौदी हाउस में सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने CID पर हमला करते हुए कहा कि उन्हें झूठी खबरें प्रचारित कर हड़ताल को और अधिक नहीं खींचना चाहिए।

१३ अप्रैल को घंटाघर में एक बड़ी संख्या को सम्बोधित करते हुए दुकानें खोलने का प्रस्ताव दिया। वे पुलिस के अधिकारियों से भी मिले और गरती सेना हटाने का प्रस्ताव किया। उस दिन उन्होंने दो सभाओं को सम्बोधित किया।

१४ अप्रैल को भीड़ ने CID के अधिकारी की

पिट्टाई कर दी। सरकार ने स्वामी जी के भाषणों को इसके लिए जिम्मेदार बताया। १५ अप्रैल को स्वामीजी ने डॉ० अंसारी के घर पर सभा को सम्बोधित किया।

१६ अप्रैल को स्वामीजी ने दुकानें खुलवाने का प्रयास किया मगर वातावरण बहुत तनावपूर्ण और जटिल था। १८ अप्रैल को भी हड़ताल नहीं खुली। स्वामीजी ने एक युवा के अंत्येष्टि संस्कार में भाग लिया।

२ मई को स्वामीजी ने सत्याग्रह समिति से त्यागपत्र दे दिया। स्वामीजी के लिए यह सत्याग्रह एक धर्मयुद्ध था। स्वामीजी ने महात्मा गाँधी को सलाह भी दी थी कि सभी सत्याग्रही इस दौरान रोजाना आधा घंटा ध्यान और ईश्वर वंदन करे। एक समय तो ऐसा लगता था कि दिल्ली में रामराज की स्थापना हो गई है। हिन्दू और मुसलमान आपसी प्रेम और भाईचारे का व्यवहार कर रहे हैं। गुंडागर्दी काबू। हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे की माताओं और बहनों को अपनी माता और बहन का सत्कार दे रहे थे, पर धीरे धीरे हालात काबू से बाहर होते गए। सत्याग्रह के अनेक नेता सँभालने का प्रयास करते मगर स्थिति तनावपूर्ण बनी रही। CID अधिकारियों के अनुसार स्वामीजी के भाषण बहुत अंश तक इस गंभीर स्थिति के लिए जिम्मेदार थे। उनका यह भी कहना था कि स्वामीजी दिल्ली और उसके समीप रोहतक आदि के आर्यों के प्रभावशाली नेता हैं। पर सरकार इस विवाद से उनका कोई भी सीधा सम्बन्ध स्थापित करने में नाकाम रही।

स्वामीजी के पुत्र इंद्र विद्यावाचस्पति पर भी शक किया गया। स्वामीजी और डॉ० अंसारी को नजरबन्द कर पंजाब या उत्तर प्रदेश (तत्कालीन संयुक्त प्रान्त) भेजने पर विचार किया गया। पंजाब और उत्तर प्रदेश के अधिकारियों ने स्वामीजी को वहाँ रखने से मना कर दिया। उनका कहना था कि दोनों राज्यों में स्वामीजी का व्यापक प्रभाव है, इसलिए गड़बड़ी बनी रहेगी। एक विचार मध्य प्रान्त के बैतूल में नजरबन्द करने का भी बना, पर बिना साक्ष्य के स्वामीजी को गिरफ्तार नहीं किया जा सका। केवल CID की आंतरिक चर्चा से हमें यह जानकारी मिलती है।

स्वामीजी ने अपना त्यागपत्र गाँधी जी को भेजा। उनकी असंतुष्टि के कुछ कारण थे। जब स्वामीजी ने हर सत्याग्रही को ध्यान करने का नियम बनाने और अन्य सुझाव दिए तब गाँधीजी का उत्तर था- 'भाई साहिब! आपको ज्ञात होगा कि मैं सत्याग्रह चलाने में माहिर हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ।' स्वामीजी को न चाहते हुए भी गाँधीजी का विचार मौन रहकर स्वीकार करना पड़ा।

गाँधीजी को लिखे पत्र में स्वामीजी के असंतुष्ट

होने के दो कारण मिलते हैं। पहला कारण था- दिल्ली के अधिकारियों का उत्तेजित होने देना और पंजाब में उन द्वारा व्यापक स्तर पर सरकारी नियम और अनुशासन के नाम पर अत्याचार करना। उन्हें लगा कि महात्मा गाँधी दिल्ली में हुई हिंसा का दोष दिल्ली के सत्याग्रहियों को देना चाहते हैं, जिनके स्वामीजी नेता हैं।

दूसरा कारण भविष्य की रणनीति को लेकर था। स्वामीजी का कहना था कि भविष्य में कोई भी सविनय अवज्ञा आंदोलन जनसाधारण में बिना उथल-पुथल के संभव नहीं है। इसलिए यह समझना गलत होगा कि कोई भी आंदोलन बिना खून खराबे के संभव है।

इन दोनों कारणों को लेकर गाँधीजी का मौन धारण करना स्वामीजी को अखरा। स्वामीजी ने २ जुलाई, १९२० के 'श्रद्धा' के अंक में लिखा था कि महात्माजी आप पर हजारों लोग अंधभक्त के समान विश्वास करते हैं। उन्होंने अपने भविष्य की परवाह किये बिना अपने को आपके लिए समर्पित कर दिया है। मुझे उनसे हमदर्दी है क्योंकि आप उनसे संवाद किये बिना अपनी घोषणाएं कर देते हैं।

सत्याग्रह कमेटी से त्याग-पत्र के बाद भी स्वामीजी कांग्रेस से जुड़े रहे। पंजाब में जलियांवाला कांड के कारण जनता पीड़ित थी। १९१९ का कांग्रेस अधिवेशन अमृतसर में हुआ। स्वागत कमेटी का अध्यक्ष स्वामीजी को बनाया गया। स्वामीजी ने अध्यक्षीय भाषण हिंदी में दिया जो उस काल में अपने आप में एक कीर्तिमान था। अध्यक्ष बनने का कारण भी उन्होंने अपने भाषण में बताया- 'मैं आज इस मंच पर कोई राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने के लिए नहीं बोल रहा, अपितु कर्तव्य निर्वहन के लिए बोल रहा हूँ। पहला कारण मुझे उन पंजाबी नेताओं की तरफ से बोलना है जिन्हें जेलों में ठूस दिया गया है। उन नेताओं की पत्नियों ने भी मुझे ऐसा करने की विनती की है। दूसरा कारण मेरे संन्यास आश्रम की मर्यादा है। अभी तक कांग्रेस राजनैतिक कारणों के लिए कार्य करती थी, पर आज उसे धार्मिक कारणों को भी शामिल करना पड़ेगा।'

स्वामीजी को अध्यक्ष बनने के लिए गाँधीजी ने पत्र लिखकर आग्रह किया था। गाँधीजी ने स्वामीजी को लिखा था कि आप इससे कांग्रेस में धार्मिक भावनाओं का समावेश करेंगे। इतिहास साक्षी है कि गाँधीजी ने धार्मिक भावनाओं का कांग्रेस में प्रवेश अवश्य किया, पर ये भावनाएं स्वामीजी के मतानुसार नहीं थीं, अपितु उनका उद्देश्य तुर्की के खलीफा के समर्थन में चलाये गए खिलाफत आंदोलन को (जो मुसलमानों का विशुद्ध मजहबी मामला था) कांग्रेस के राजनैतिक आंदोलन के साथ जबरदस्ती नत्थी करना था।

शर्म क्यों नहीं आती?

□ प्रो० शामलाल कौशल 975-बी/२० ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

कोई जमाना था जब शर्म, लिहाज, हया आदि मनुष्य के आचरण का अभिन्न अंग होते थे और मर्यादित जीवन व्यतीत करने में लोग गर्व महसूस करते थे। पर अब ये बीते जमाने की बातें हो गई हैं। लोगों को अब किसी भी बात पर शायद शर्म आनी बंद हो गई है। शर्म मन के एहसास की एक ऐसी स्थिति है जो उसे वह काम करने या बात कहने से रोकती है जिसे कि वह खुद भी ठीक नहीं समझता।

शर्म आने के पीछे नैतिकता, समाज या कानून का डर, स्वयं के विचार तथा व्यवहार, परिवार की छवि, परम्परा तथा बदनामी होने का डर हो सकते हैं। अधिकांश बुराइयों का कारण लोगों को किसी बात पर शर्म न आना है। देश में बाढ़, सूखा, दंगे, फसाद, आगजनी, दुर्घटनाएं, भूचाल से तबाही आदि बातें होती रहती हैं जिसमें सरकार की तरफ से अनाज, कपड़े, कम्बल, वित्तीय सहायता दी जाती है। सच्ची बात तो यह है कि जिन लोगों के लिये यह सब दिया जाता है उन तक यह पहुँचता नहीं। मध्यस्थ अधिकांश हड़प जाते हैं। झूठे हस्ताक्षर या रसीदें बनवा कर वितरण दिखा दिया जाता है। विपरीत परिस्थितियों के शिकार लोग शिकायत करते हुए देखे जा सकते हैं। जिनका सर्वस्व तबाह हो गया, उनका हिस्सा हड़पते हुए मध्यस्थों को शर्म क्यों नहीं आती? उनकी अन्तरात्मा उन्हें झिंझोड़ती या फटकारती क्यों नहीं? शायद ये लोग इसलिये निर्भय होते हैं क्योंकि इस लूट में ऊपर से नीचे तक सबके हिस्से बंटे हुए होते हैं।

अपने बच्चों के सामने कुछ माँ बाप एक दूसरे से लड़ते झगड़ते हैं, गाली गलौच, मारपीट करते हैं या फिर किसी तीसरे में दिलचस्पी रखते हैं, उन्हें शर्म क्यों नहीं आती? शिक्षक लोग इतनी तनखाह लेने के बावजूद भी विद्यार्थियों को पढ़ाते क्यों नहीं? पेपर आऊट कराते हैं, पैसे लेकर नकल कराते हैं तथा उत्तरपुस्तिकाएँ बदलवा कर कुछ विद्यार्थियों की तरफदारी करते हैं और फिर इन्हीं विद्यार्थियों के साथ मिल-बैठकर धूम्रपान/मदिरापान करते हैं। इन्हें शर्म क्यों नहीं आती! उन्हें क्यों समझ में नहीं आता कि इससे समाज पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है।

कभी डॉक्टर को भगवान का दर्जा मिला हुआ था। लेकिन आजकल कुछ लोगों ने पैसे के लालच में इस पेशे को बदनाम करके रख दिया है। आजकल तो धनवान लोगों के द्वारा पांच सितारा टाईप प्राइवेट अस्पताल बनाये जा रहे हैं, जहाँ इलाज के लिये मनमर्जी के पैसे रेंटें जाते हैं। कई बार मरीज मर चुका होता है, फिर भी इलाज करने का ढोंग करके पैसे वसूले जाते हैं। कई बार मृतक के इलाज का बिल न अदा करने पाने के कारण मृतक की लाश तक नहीं दी जाती। इस पेशे में आजकल दुआ नहीं बल्कि पैसा कमाने को ही प्रमुखता दी जाती है। डाक्टर लोग ग्रामीण इलाकों में अपनी ड्यूटी कटवाकर शहरों में ही नियुक्तियां करवा लेते हैं ताकि अधिक पैसा कमा सकें। सरकारी अस्पताल में डाक्टर छुट्टी लेकर अपने निजी अस्पताल (कई बार किसी और के नाम से) चलाकर गरीब

मरीजों को धोखा देते हैं। टैस्ट की कई मशीनें जल्दी-२ ठीक नहीं कराई जातीं ताकि मरीज अस्पताल से बाहर प्राइवेट टैस्ट कराएँ और डाक्टरों को कमीशन मिले। नकली दवाईयां भी बेची जाती हैं, जिससे मरीजों के जीवन से खिलवाड़ होता है। ऐसा काम करने वाले पढ़े लिखे लोगों को शर्म क्यों नहीं आती? भगवान को ये लोग क्या मुँह दिखायेंगे?

लोग साधु, संतों, धार्मिक गुरुओं, बाबाओं के पास अपनी समस्याएँ हल कराने तथा मन की शांति प्राप्त करने के लिये बहुत आस्था/विश्वास के साथ जाते हैं। भक्तजन उन्हें भगवान समझ कर सर्वस्व न्यौछावर करते हैं लेकिन वे तथाकथित गुरु ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं, महिलाओं का शोषण करते हैं, धन सम्पत्ति के अम्बार लगा लेते हैं, साईड बिजनेस करते हैं, अपने शिष्यों को अपनी पसंद की राजनीतिक पार्टी को चुनावों में वोट देने के लिये दबाव डालकर सियासी खेल खेलते हैं ताकि पोल खुलने पर कोई भी सरकार उनका कुछ न बिगाड़ सके। त्याग, श्रद्धा का प्रपंच रचने वाले इन पाखंडियों को शर्म क्यों नहीं आती?

सभी प्रकार के झगड़े तथा क्लेश की जड़ हमारे राजनेता, लोगों की सेवा करने के बदले में सत्ता का दुरुपयोग करते हैं, रिश्वत लेते हैं, अपने विरोधियों पर झूठे केस चलवा उन्हें खुड्डे लाईन लगाते हैं, सरकारी खजाने का दुरुपयोग करते हैं। कई नेताओं पर आपराधिक केस चलते हैं। जनसेवा के बदले में जब नेता लोग ये कुकर्म करते हैं उन्हें शर्म क्यों नहीं आती? ये किसी का आदर्श नहीं बन पाते।

क्या ही अच्छा हो कि समाज के सभी जिम्मेवार व्यक्ति मर्यादित जीवन जीयें और बुरे काम करने में शर्म महसूस करें। इसी में सबकी भलाई है और हमारा समाज सुखी हो सकता है।



हल्दी घाटी का नर-केसरी

□ रामफल सिंह आर्य, सुन्दरनगर (हिप्र) 094184 77714

राजपूताने की वीर प्रसविनी धरा अपने वीर पुत्रों के क्षीण होते शौर्य, पराक्रम एवं रक्त की मन्द होती ऊष्णता को देख-र कर अपनी कृक्षि पर लज्जित हो रही थी। भयाक्रान्त होकर अपनी मान मर्यादा का बलिदान करते राजपूतों की तुलना जब वह अतीत के रण-बांकुरों से करने लगती तो उसके नयन दुःखों की अश्रुधारा की अपेक्षा अपमान एवं तिरस्कार से अधिक आर्द्र हो उठते। एक के पश्चात् एक वीर उस दुष्ट, कामुक एवं कुटिल मुगल शासक अकबर की शरण में जा चुके थे और अपनी उन ललनाओं को भी उसे समर्पित कर चुके थे जिनका मुख कभी सूर्य ने भी न देखा था। यह कायरता की पराकाष्ठा थी। मानसिंह द्वारा किये गये समर्पण ने तो मानो माता का आंचल ही तार-र करके उसे लज्जित होने पर विवश कर दिया था। आह! कहाँ तो वे माता की ओर वक्र दृष्टि से देखने वाले आतताईयों का शीश माता की झोली में डालकर अरिदल के शोणित से उसका श्रृंगार करने वाले स्वाभिमानी, वीरता की प्रतिमूर्ती, केसरिया पगड़ीधारी योद्धा एवं कहाँ आज अपनी पुत्रियों, भगिनियों सहित मुगलों के शरणागत होते ये अभाग्य? परन्तु अभी भी इस नैराश्य लीला में एक किरण की चिन्तारी उस धरा को दिखाई पड़ रही थी। अभी वह विचार कर रही थी कि एक व्यक्ति शेष है जो उसकी लाज बचायेगा और

उसके अपमान की, उसके प्रतिशोध की ज्वाला को शान्त करेगा। उसके प्रताप का प्रताप अभी शेष है, उसके हृदय में वह ज्वाला जल रही है जो अरिमुण्डों की माला उसे अर्पित कर उसके अश्रुओं का उपचार करेगी।

इधर प्रताप के हृदय में जन्म भूमि के प्रति असीम स्नेह और दूसरी ओर सत्ता के मद में चूर अकबर के हृदय में मेवाड़ को हथियाने की लालसा। यूं तो लोग आज उसे 'बादशाह' कहते हैं परन्तु जब तक मेवाड़ स्वतन्त्र है तब तक उसकी विजय अधूरी रहेगी। मेवाड़ को पाने की लालसा में वह कूटनीति का आश्रय ले रहा था। राजपूतों को ही राजपूतों का शत्रु बना कर वह दुधारी तलवार चला रहा था। अहंकार फूट की जननी होती है, यही अहंकार राजपूतों का विनाश कर रहा था। अकबर को अपने स्वप्न को साकार करना है तो वह राजपूतों के परस्पर युद्ध से ही संभव हो सकता था, उसमें स्वयं में यह सामर्थ्य कहाँ था? इसी कुटिलता का आश्रयण कर उसने मान सिंह को झटक कर अपना सेनापति बना दिया।

विधाता ने प्रताप को जहाँ एक अजेय योद्धा के लिये समुपयुक्त शरीर सौष्ठव प्रदान किया था वहीं पर जननी और जन्मभूमि के लिये अथाह प्रेम, श्रद्धा एवं बलिदानी भावना से परिपूर्ण विशाल हृदय भी प्रदान किया था। जब वह मेवाड़ की धरा की ओर बढ़ते किसी

शत्रु को देखता तो उसके भीतर एक ज्वालामुखी सुलग उठता। उसकी धमनियाँ उष्ण शोणित के प्रबल प्रवाह को उसकी आँखों में उतार देती और मुख रक्त वर्ण होकर तमतमाने लगता। उसकी भुजायें फड़कने लगती और उसकी असि म्यान से बाहर आकर अपनी जिह्वा लपलपाने लगती।

परन्तु वह अदूरदर्शी न था। उसे अपनी सामर्थ्य एवं अपने वीरों की शक्ति का अनुमान एवं परिज्ञान पूर्ण रूपेण था, अतः वह अपने इस ज्वाला मुखी की अग्नि के वेग को किसी प्रकार से नियन्त्रित किये हुए था। एक ओर प्रबल शत्रु का दिन-दिन बढ़ता बल, दूसरी ओर अपने घर के आन्तरिक कलह से वह वीर अत्यन्त खिन्न था। कुंभलमेर के दुर्ग की प्राचीर से जब वह चितौड़गढ़ की ओर निहारता तो उसके मस्तिष्क में एक तीव्र झंझावात उठता। परन्तु वह करे क्या? दांत पीस कर रह जाता। राजपूतों को फूट का रोग लग चुका था जिसका कोई उपचार न था।

आज एक सन्देशवाहक सन्देश लेकर आया है कि मानसिंह उसके अतिथी बन कर पधार रहे हैं और भोजन भी उसके यहाँ करना चाहते हैं। जिस व्यक्ति ने कुल गौरव को कलंकित किया है, वह स्वयं प्रताप के पास आना चाहता है। एक अतिथि बन कर। 'अतिथि देवो भव' का पाठक प्रताप बड़े असमंजस में पड़ गया। वह अतिथि सत्कार करे या उसे लौटा दे? संस्कारों की किंचित् विजय तो हुई परन्तु आत्माभिमान पर वह राज्य न कर सकी। अपने पुत्र को कह दिया कि वह अतिथि का स्वागत कर उसको भोजन करा दे। जब मानसिंह ने पूछा कि तुम्हारे पिता जी कहाँ हैं तो पुत्र ने कहा कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मानसिंह ने इसे अपना अपमान समझा और राणा जी से भेंट की इच्छा प्रकट की। राणा ने कहा कि मैं ऐसे कुलांगारों से भेंट नहीं करना चाहता

जिन्होंने राजपूतों के कुल को कलंकित किया हो। बस, सुनते ही मानसिंह आग बबूला हो उठा। घर में आये अतिथि का यह अपमान! बोला, ठीक है प्रताप! अब अपनी भेंट युद्ध क्षेत्र में ही होगी। प्रताप की आंखों की भाषा उसने पढ़ ली थी अतः वह प्रतिशोध की अग्नि में जलते हुए वहाँ से चला गया।

हाय रे दुर्भाग्य! यदि इस राजपूती आवेश का तनिक सा भी परिचय उसने अकबर को दिया होता, यदि ये भुजायें दिल्ली की ओर निहार कर तनिक भी फड़की होतीं तो इतिहास कुछ और ही होता। आज जिस अपार सैन्य दल के बल पर वह अपनी ही माता के वक्ष स्थल को विदीर्ण करने हेतु समुद्यत हुआ है, यदि उसका थोड़ा सा भी दर्शन इस पतित मुगल को कराया होता तो आज माता रक्त रोदन नहीं कर रही होती। अन्धा क्या चाहे? दो आंखें! अकबर इस समाचार को पाकर झूम उठा। उसकी चिर-परीचित कुटिल मुस्कान उसके मुख पर खेलने लगी परन्तु अपने मनोभावों को छुपाने में वह सदैव की भाँति सफल रहा। आज एक राजपूत ही दूसरे राजपूत का रक्त पिपासु बन कर रणभूमि की ओर बढ़ रहा है तो मानो अकबर के दोनों हाथों में मोदक हैं।

अन्ततः वह समय आन उपस्थित हुआ है जब वीर प्रताप के शौर्य का दर्शन करने के लिये हल्दीघाटी की पर्वतमालायें उत्कण्ठित हो उठी हैं। जिन वीरों को अपनी मातृभूमि से प्रेम था आज वे अपने शीश अपनी हथेलियों पर धर कर रणभूमि को संवारने आये हैं। यह युद्ध मात्र किसी भूभाग हेतु नहीं था अपितु अपने स्वाभिमान, अपनी अस्मिता, अपने युग युगान्तर से संचित गौरव के लिये था।

इस युद्ध के साक्षी आज यहाँ के वीरों के साथ-२ यहाँ के वृक्ष, लतायें, सुदृढ़ शैल शिखरों के मस्तक भी बने

हुए थे। ज्येष्ठ मास की भीषण धूप से तपती यह धरा आज रात्रुदल के रक्त से अपनी तृष्णा को शान्त करने के लिये आतुर हो उठी थी। यह वीर प्रसविनी भूमि आज प्रतीक्षा कर रही थी कि उसका महाभारत के अभिमन्यु सम उत्साहित पुत्र वीर प्रताप कितने अरि मुण्डों को उसकी झोली में अर्पित करेगा। प्रताप के उत्साह का भी आज कोई पारावार न था। आज उसकी वज्रदण्ड के समान कठोर भुजायें एक नवीन इतिहास लिखने जा रही थीं। उसकी आंखें अंगारों की वर्षा कर रही थीं। जब वह अपने सैन्यदल के मध्य आया तो रणबाँकुरे सैनिकों ने उसके मुख-मण्डल को देखकर अनुमान लगा लिया कि आज प्रताप साक्षात् कालाग्नि के रूप में उनके मध्य में खड़ा है। उसकी एक दृष्टि ही उसका सन्देश उन वीरों के मस्तिष्क में पहुँचा देने में सक्षम थी। युद्ध से पूर्व उसके उद्बोधन ने मानो मेवाड़ी वीरों में एक नवीन जीवन का ही संचार कर डाला और उनके लिये जीवन और मृत्यु में कोई भेद न रहा। प्रताप की सेना में राजपूतों की संख्या से अधिक संख्या कोल, भील आदि वनवासियों की थी जो यह सिद्ध कर रही थी कि प्रताप इस देश के प्रत्येक वीर का अभिमान था। छोटे-बड़े के भेदभाव से ऊपर उठा यह वीर प्रत्येक हृदय का सम्राट् बन चुका था।

एक ओर यह वीर अपनी सीमित सेना का नेतृत्व करने के लिये उपस्थित था तो दूसरी ओर खमनोर के उद्यान में शाही सेना एक टिड्डीदल की भाँति छा रही थी। अपनी अपार सेना, तोपों एवं अन्य आधुनिक शस्त्रास्त्रों से युक्त मान सिंह भी रणभूमि में डटा हुआ था। परन्तु आश्चर्य है कि इस अति विशाल सैन्यदल के होते हुए भी अकबर स्वयं यहाँ आने का साहस न जुटा पाया था। या तो उसे इस सैन्य शक्ति पर ही

विश्वास न था या वीर प्रताप की शौर्य गाथा ही उसे विचलित कर चुकी थी। उसकी पराजय का प्रथम लक्षण तो यही था। अकबर यह जान गया था कि यदि सात फुट से ऊँचा यह नरसिंह युद्ध में तेरे समक्ष आ जायेगा तो प्रत्येक बाधा को चीर तुझे निहत्था ही फाड़ डालेगा। संभवतः इसी भय ने उसे युद्ध में जाने न दिया।

मेवाड़ के वीर अपने सामने अपार रात्रु सेना को देख कर न तो भयभीत हुए, न विचलित हुए और न ही शकित हुए कि हमारी विजय होगी या पराजय। वे तो एक स्थिर निष्काम योगी सम अपना कर्तव्यपालन करते हुए युद्ध में आन डटे थे। 'हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्' का भाव जिनके मन में आ चुका हो उन्हें भला कौन पराजित कर सकता था? श्रेष्ठ युद्धनीति का आश्रय लेते हुए उन्होंने गौरिल्ला युद्ध को अपनाया। जिन्हें अपने दल की विशालता पर गर्व था और जो यह विचार कर हल्दीघाटी में आये थे कि वे बादशाह को प्रताप का शीश भेंट करेंगे- उनका यह मोह मेवाड़ी वीरों के विषैले शरों ने भंग कर डाला। भयंकर विषधर के तुल्य फुंफकारते हुए बाणों की वर्षा का तो उन्हें अनुमान ही न था। कहीं से शिलाओं की वर्षा, कहीं शरों की वर्षा और कहीं से सुदृढ़ बाहुओं में लरजती चमकती असिधारा की पंक्तियाँ! मुगल सेना के थोड़े ही काल में छक्के छूट गये। आक्रमण करने के अपेक्षा वे अपनी प्राण रक्षा पर उतारू हो गये।

मुगल सेनापति मानसिंह ने पुनः सेना का व्यूह परिवर्तित किया और आमने-सामने का युद्ध होने लगा। उनकी तोपें गरजने लगीं। पूरी हल्दीघाटी गोलों की ध्वनि से गुंजित होने लगी। अब इस युद्ध का वर्णन करने में लेखनी असमर्थ है। राजपूतों के हाथ आज मानो यन्त्रों में परिवर्तित हो चुके थे और रात्रुओं के

शीश विहीन धड़ों से धरा पट चुकी थी। एक-२ वीर सौ-२ मुगलों से जूझ रहा था। कहाँ भंयकर अग्नि वर्षा करती तोपें और एक लाख से भी ऊपर विशाल सेना और कहाँ तीर एवं तलवार के बल पर युद्ध करते मात्र बीस सहस्र अप्रशिक्षित मेवाड़ी वीर! फिर भी मुगल सेना के छक्के छूट रहे थे। प्रताप के पराक्रम का तो आज कहना ही क्या? हल्दीघाटी आज समर में अपने वीर पुत्र को देख कर विस्मित हो रही थी। शत्रुओं की लहर सी प्रताप को घेरने के लिये आती और थोड़े ही समय में धरा पर बिछ जाती। भंयकर झंझावात की भाँति महाराणा जी जिस ओर चलते शवों के ढेर लग जाते। इस भयानक समर में अपने पराये का भेद ही मित चुका था। ऐसा रक्तपात देख कर ही कायरों को तो चक्कर आ जाते।

प्रलयकाल की अग्नि के तुल्य रण में तांडव करते हुए प्रताप की दृष्टि अचानक मानसिंह पर पड़ी। फिर क्या था! उन्होंने चेतक को एड लगाई और वह स्वामीभक्त अरव, जो पूर्णरूपेण मानो प्रताप के लिये ही बना था, बड़े वेग से मानसिंह के हाथी की ओर बढ़ा और अपने दोनों पैरों को उठा कर हाथी के मस्तक पर रख दिया। अपने प्रबल शत्रु को सामने पाकर प्रताप ने उस पर भाले से वार किया परन्तु महावत आगे आया और मानसिंह को उसके भाग्य ने बचा लिया। यहीं पर महाराणा का प्यारा चेतक भी घायल हो गया और इधर से एक विशाल झुण्ड ने राणा को घेर कर समाप्त करना चाहा। जब झाला सरदार ने यह दृश्य देखा तो वह बचाव के लिये दौड़ आया। उसने अपने भांजे का मुकुट भी शीघ्रता से धारण कर लिया और प्रताप को वहाँ से हटा दिया। सैंकड़ों घावों से क्षत-विक्षत प्रताप के प्राणों की रक्षा चेतक ने ही की और वह युद्धभूमि से उन्हें दूर ले गया। झाला सरदार की आकृति प्रताप से बहुत

प्रताप की दृष्टि अचानक मानसिंह पर पड़ी। फिर क्या था! उन्होंने चेतक को एड लगाई और वह स्वामीभक्त अरव, जो पूर्णरूपेण मानो प्रताप के लिये ही बना था, बड़े वेग से मानसिंह के हाथी की ओर बढ़ा और अपने दोनों पैरों को उठा कर हाथी के मस्तक पर रख दिया। अपने प्रबल शत्रु को सामने पाकर प्रताप ने उस पर भाले से वार किया परन्तु महावत आगे आया और मानसिंह को उसके भाग्य ने बचा लिया।

मिलती जुलती थी अतः शत्रुदल उन्हें ही प्रताप समझ कर उन पर टूट पड़ा। झाला के दोनों हाथों में तलवारें अपना जौहर दिखा रही थीं। उसके आस-पास कम से कम दो सौ सैनिकों के शव गिर चुके थे परन्तु वह अकेले भला कितनों से युद्ध कर सकते थे। अन्ततः झाला सरदार ने वीरगति प्राप्त की और इस प्रकार से युद्ध समाप्ति की ओर बढ़ा।

युद्ध की समाप्ति पर इतने वेग से वर्षा हुई कि जल थल एक हो गया। खमनौर गांव का तालाब आज मेघों के जल के स्थान पर रक्त से परिपूरित था जिसे आज भी 'रक्त तलाई' के नाम से जाना जाता है। पूरी धरा का शृंगार आज कटे हुए मानव अंगों से हो रहा था। प्रताप की वीरगाथा अपने हृदय में अंकित कर मानसिंह लज्जित होकर दिल्ली लौट गया। यद्यपि कुंभलमेर पर मुगलों का आधिपत्य हो गया परन्तु प्रताप का भय उन्हें स्वप्न में भी भयभीत करता था। उन्होंने अपने जीवन में न ऐसा युद्ध देखा था और न ऐसा योद्धा!

अपनी मातृभू का यह अद्भुत वीर प्रताप हल्दीघाटी के चप्पे-२ से परिचित था। अपना पीछा करते हुए शत्रुओं को बहुत पीछे छोड़कर तथा एक गहरे एवं विशाल नाले को एक ही छलांग में पार कर चेतक अपने स्वामी को सुरक्षित स्थान पर ले आया और वहीं पर अपने प्राण त्याग दिये। आह! प्यारे चेतक तू भी न जाने किस मिट्टी का बना था, न जाने प्रताप से तेरा कौन से जन्म का सम्बन्ध था जिसका ऋण तू इस भाँति चुका कर गया। महाराणा के साथ-२ तेरा यश भी सदैव जीवित रहेगा।

राजपूताने के इतिहास में कोई भी राजा ऐसा न रहा होगा जिसने इन परिस्थितियों में, जिनमें वीर प्रताप रहा, ऐसे प्रबल शत्रु से किंचित् भी भयभीत हुए बिना उसे छक्के छुड़ा दिये हों। वह स्वाभिमानी वीर वनों, बीहड़ों, गुफाओं में वर्षों तक भटकता रहा। अनेक आपदाओं को झेला, खाने के लिये जंगली फल-फूल-- यहाँ तक कि घास को पीस कर रोटी बनाता रहा। संसार का कोई प्रलोभन उसे डिगा न पाया, कोई शक्ति उसे झुका न पाई और कोई भी भय उसे भयभीत न कर सका। जो उसके कार्य का मूल्य समझते थे वे सदैव उसके लिये अपने प्राणों का उत्सर्ग करने को समुद्यत रहते, यथासंभव प्रत्येक सहायता उसे देते।

महाराणा प्रतिक्षण यही विचार करते रहते कि मैं कैसे अपनी मातृ भू की रक्षा करूँ, कैसे अपना खोया गौरव पुनः प्राप्त करूँ! धन नहीं है, राज्य नहीं है, सैनिक नहीं हैं परन्तु विरवास से पूरित हृदय अभी हारा नहीं है। अकस्मात् एक सहायता श्रेष्ठी भामाशाह से प्राप्त होती है। एक बहुत विशाल कोश भामाशाह ने राणा के चरणों में अर्पित कर के इतिहास में अपनी गाथा, अपनी कीर्ति अमर कर डाली। भामा शाह! तुम्हारी उस आहुति के कारण यह राष्ट्र सदैव तुम्हारा ऋणी रहेगा। यह विपुल संग्रह त्यागकर तुमने अपना स्थान बहुत ऊँचा बना लिया है।

राणा ने पुनः शक्ति का संचय किया और कुंभलमेर सहित मेवाड़ के अधिक तर भाग को स्वतन्त्र करवाया। युवावस्था (शेष पृष्ठ ३३ पर)

जीवन को उत्तम बनाने के चार उपाय

बृहदारण्यक उपनिषद् पंचम अध्याय, १३वें ब्राह्मण के आधार पर

□ दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि उसे इसी जगत् में रहना है और उसका स्वर्ग व नरक यही है। जैसे मछली का समूचा जीवन जल के भीतर ही है। और जल से बाहर निकलते ही उसका अंत हो जाता है, इसी प्रकार मानव का सारा जीवन इसी पृथ्वी पर है, इसी संसार में है और इसी दुनिया में है। स्वर्ग और नरक कोई अलग लोक नहीं है, ईश्वर के कोई पृथक् विभाग नहीं हैं। वेद का उपदेश है—

इह त्वा भूर्या चरेदुपत्मन् दोषावस्त दीदिवां समनुद्यून।
कीलन्तस्त्वा सुमनसः सपेमाभिः द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम्॥
ऋग्वेद ४/४/९

हे मनुष्य! तू प्रतिदिन, दिन-रात इसी संसार में अपने चमकने वाले आत्मा से बहुत पदार्थों को जान। तू धन, यश, तेज को दृढ़ करता हुआ, अच्छे मन वाला होकर सब जनों के साथ दृढ़ रहता हुआ प्रभु को पूजने वाला बन। केन उपनिषद् में भी बहुत सुंदर ढंग से उपदेश दिया गया है—
इह चेद्वेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहा वेदी महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः प्रेत्यास्माँल्लोकादमृताः भवन्ति॥

हे मनुष्य! अगर तूने इस जन्म में और इस संसार में रहते हुए ही आत्म-तत्त्व जान लिया, तब तो ठीक है, अगर नहीं जाना तो महाविनाश है। उत्तम पुरुष इस विश्व के जड़ चेतन पदार्थों को जानकर इसी परिणाम पर पहुंचे हैं कि मूल तत्त्व वही है। ऐसे उत्तम पुरुष ही इस लोक के बाद अमृत पद को प्राप्त होते हैं।

प्रथम साधन उक्थ

शिष्य- भगवन्! एक शंका है।

प्रजापति- वत्स! कहो क्या शंका है!

शिष्य- इस दुनिया को ही अगर सब कुछ मान लें, तब इससे छुटकारा कैसे होगा?

प्रजापति- इस संसार से तो जीवित रहते हुए एक क्षण भी छुटकारा संभव नहीं है। कोई भी प्राणी-- और मनुष्य तो सर्वथा नहीं-- एक क्षण के लिए निश्चेष्ट रह सकता है। जब इस संसार में रहना ही है, तब क्यों न अच्छा बन कर रहा जाए?

शिष्य- आचार्यवर! इसका मार्ग क्या है?

प्रजापति- यही अब तुम्हें बताने लगा हूँ।

जीवन को उत्तम और सफल बनाने के लिए चार उपाय हैं। इनमें पहला उपाय है- 'उक्थ'। उपनिषद् के शब्दों में उक्थ नाम है प्राण का।

उक्थं प्राणो वा उक्थं प्राणो हीदं सर्वमुत्थापयत्युद्धास्मा-
दुक्थविद् वीरस्तिष्ठत्युक्थस्य सायुज्यं सलोकतां जयति स
एवं वेद।

यह जीवन=प्राण=उक्थ है, क्योंकि यह सबको उठाता है। इसी प्राण=उक्थ=जीवन की सहायता से ही बीज भूमि फाड़ कर बाहर आता है। इसे जानने वाला ही वीर होता है और वह जीवन-विद्या की समानता और समीपता को प्राप्त होता है।

जीवन का पहला लक्षण यह है कि वह बुद्धिशील, उन्नतिशील और ऊर्ध्वगामी हो। हम अपने शरीर को देखें। इसका प्रारंभ माता-पिता के एक घटक (सैल) से होता है। यही घटक एक से दो, दो से चार, चार से आठ- इस प्रकार निरन्तर बढ़ते जाते हैं। २० वर्ष की आयु तक तीन-साढ़े तीन सेर प्रतिवर्ष बच्चा बढ़ता है। इस समय युवक के शरीर में साठ लाख करोड़ घटक होते हैं। इस प्रकार यह शरीर २५ वर्ष तक निरन्तर वृद्धिशील होता हुआ ४० वर्ष की आयु तक इस वृद्धि को स्थिर रखता है। और उसके बाद धीरे-धीरे न्यूनता आने लगती है जिसका अन्तिम परिणाम जरा अवस्था और मृत्यु होती है।

मनुष्य जीवन कभी सार्थक कहा जा सकता है जब वह न केवल शारीरिक दृष्टि से किंतु मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी उन्नतिशील हो। शरीर स्वस्थ है- इसके कई प्रमाणों में से एक अन्यतम प्रमाण यह भी है कि आयु की एक निश्चित सीमा तक उसमें जहाँ वृद्धि हो, वहाँ साथ ही आयु की उस सीमा के बाद उस बुद्धि में स्थिरता हो। मानसिक और आत्मिक जीवन में भी इस प्रकार क्रमशः विकास और वृद्धि होनी चाहिए। अगर केवल शारीरिक वृद्धि हो और मानसिक तथा आत्मिक विकास न हो, तब मनुष्य और पशु में कोई भेद नहीं रहेगा। मानसिक और आत्मिक विकास का सर्वोत्तम साधन धर्म ही है। अपने दैनिक व्यवहार में इस धर्म का संग्रह करना-- यही जीवन

दर्शन की ओर पहला कदम है। मनु के शब्दों में—
धर्म शनैः संचिनुयाद् वल्मीकमिव पुत्तिकाः।

परलोक सहायार्थं सर्वभूतान्यपीडयन्॥४/१३८

जिस प्रकार वल्मीक अर्थात् दीमक धीमे-धीमे जमीन में से मिट्टी की बांबी-ऊँचा ढेर सा बनाता है। इसी प्रकार सब भूतों को पीड़ा न देता हुआ अपनी परलोक यात्रा की सहायता के लिए धर्म का संचय करे।

तस्माद्धर्म सहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छनैः।

धर्मेण हि सहायेन तमस्तरति दुस्तरम्॥४/२४२

इसलिए अपने आगामी जन्म के लिए इस जीवन में धर्म का नित्य संचय करे। इसी के सहारे वह भयंकर दुःख सागर से पार हो सकता है। धर्म का संचय करने के लिए मानव में किस प्रकार के गुण चाहिए— यह गीता में भगवान कृष्ण के इन शब्दों से ज्ञात होता है—

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साह समन्वितः।

सिद्धयसिद्धयो निर्विकारःकर्ता सात्त्विक उच्यते॥१८/२६

पाँच गुणों से युक्त व्यक्ति मानसिक और आत्मिक विकास के मार्ग पर चलने योग्य हो सकता है। (१) सब प्रकार के संग=लगाव= से मुक्त, (२) अभिमान रहित, (३) धैर्य शील, (४) सदा उत्साह धारण करने वाला, (५) सफलता-असफलता में एक सदृश रहने वाला।

आत्म-निरीक्षण द्वारा उन्नति की ओर

जीवन तत्त्व के इस मार्ग पर चलते हुए सदा सफलता हो, यह आवश्यक नहीं है। इसके विपरीत असफलता, दुःख, क्लेश, विपरीत अवस्थाएँ ही अधिक आ सकती हैं। उन्नति व विकास का मार्ग, जिसे उपनिषद् में श्रेय मार्ग कहा गया है— कष्ट, क्लेश और पीड़ापूर्ण ही अधिक होता है। श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः। श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥

कठोपनिषद् २/२

श्रेय और प्रेय दोनों मार्ग मनुष्य के सामने हैं। धीर पुरुष पूरा विवेचन करता है। वह प्रेय की अपेक्षा श्रेय का वरण करता है। मंदमति पुरुष सांसारिक सुख-चैन के लिए प्रेय का वरण करता है। इसलिए धैर्य के साथ प्रेय मार्ग पर चलते हुए आत्मा में कभी अवसाद, निराशा और पराजय की भावना नहीं आने देनी चाहिए। मनुष्य को गिराने वाली दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ हैं— अवसाद और अभिमान। जीवन में इन दोनों से बचना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण ने कितने सुंदर शब्दों में कहा है—
उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।

आत्मैव ह्यात्मनो बंधुरात्मैव रिपुरात्मनः॥ गीता ६/५

मनुष्य अपना उद्धार अपने आप ही करे। अपने

आप को कभी भी निराशा न होने दे। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य स्वयं ही अपना बंधु, सहायक या स्वयं ही अपना शत्रु है। अपना बंधु कौन बन सकता है? इसके उत्तर में श्रीकृष्ण भगवान कहते हैं—

बन्धुरात्माऽऽत्मनस्य येनात्मैवात्मनाः जितः।

अनात्मनस्तु शत्रुत्ये वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥गीता ६/६

जिसने अपने आप को जीत लिया, वह स्वयं अपना बंधु है। परंतु जो अपने आपको नहीं पहचानता, वह स्वयं अपने आप से शत्रु के समान वैर करता है।

इसलिए मनुष्य को सबसे पहले अपने आत्मा को जानते हुए इस उत्थान के मार्ग का अवलंबन करना चाहिए। प्रतिदिन अपने भीतर की पड़ताल करनी चाहिए। वह ध्यान पूर्वक सोचे कि क्या मैं पशु मार्ग की ओर जा रहा हूँ अथवा उत्तम पुरुषों का अनुकरण कर रहा हूँ। यही 'उक्थ' का मार्ग है। इसी का नाम आत्म-परीक्षण है। जिस समय मनुष्य निष्पक्ष और निर्दयतापूर्वक अपनी पड़ताल स्वयं करेगा उस समय भक्त कबीर के शब्दों में यही कहेगा—

बुरा जो देखन मैं चला बुरा न दीखा कोय।

जब मन खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय।

एक उर्दू कवि के शब्दों में कसाई की तरह क्रूरता के साथ आत्म-निरीक्षण करना चाहिए—

नस्तर को हाथ में लेकर फस्साद ने कहा।

रम-रम में जख्म है लगाऊँ कहाँ-कहाँ॥

(दूसरा साधन यजुः आगामी अंक में)

बोधकथा

जीवन-दान

अवातिक नरेश भर्तृहरि शिकार के लिए गए। उन्होंने एक मृग का शिकार किया। दुःखी हिरणियाँ करुण क्रंदन करने लगीं। जंगल में महायोगी गोरखनाथ तपस्या कर रहे थे। उन्होंने हिरणियों का क्रंदन सुना, तो उनका हृदय द्रवित हो उठा। तभी महाराज भर्तृहरि गोरखनाथजी के पास पहुँचे। गोरखनाथजी ने पूछा, 'राजन्, इस बियावान में कैसे आना हुआ? क्या किसी मृग का शिकार करके लौट रहे हो?'

भर्तृहरि के हाँ कहने पर गोरखनाथ ने पूछा, 'राजन्, क्या आप किसी को जीवन देने की क्षमता रखते हैं?'

भर्तृहरि ने जवाब दिया, 'मुझ जैसा साधारण प्राणी किसी को जीवन कैसे दे सकता है?' गोरखनाथ ने समझाते हुए कहा, 'तब किसी निरीह प्राणी के प्राण लेने का आपको क्या अधिकार?'

भर्तृहरि ने उसी समय संकल्प लिया कि भविष्य में किसी प्राणी की हत्या नहीं करूँगा। साथ ही, उन्होंने गोरखनाथ जी से दीक्षा ग्रहण कर ली।

मन वशीकरण साधना

□हरिकृष्ण आर्य, चौखण्डी गांव, नई दिल्ली



यदि हम मन को शिवसंकल्प वाला करके, बुद्धि चित्त व अहम् का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लें तो ऐसे संयमित, नियन्त्रित वशीभूत साधनायुक्त मन द्वारा आत्म अनुभव व परमात्म अनुभव प्राप्त कर आनन्दित हो सकते हैं।

परमपिता परमेश्वर ने अद्भुत मानव शरीर में मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार= चार सूक्ष्म तत्त्व दिए हैं, जिन्हें हम अन्तःकरण चतुष्टय के नाम से जानते हैं। जैसे-जैसे शरीर में मन का विकास व विस्तार होता जाता है- बुद्धि, चित्त व अहम् की अनुभूति बढ़ती जाती है। इन आन्तरिक सूक्ष्म चारों करणों की महानता व इनके लक्षण परमपिता ने वेद माता के द्वारा हमको बताए हैं। यजुर्वेद के तृतीय अध्याय में मंत्र संख्या ५३ से ५७ में मन व अन्तःकरण (बृहद् मन) का सारगर्भित वर्णन किया गया है। वेदमाता का उपदेश है कि मनुष्यों में अत्यंत प्रशंसनीय स्तुतियुक्त व्यवहार, जिससे मनुष्यों के सब गुण जाने जाते हैं, उन गुणों के साथ विचार विमर्श करने वाला, संकल्प विकल्प करने वाला, व्यवहार ज्ञान की कसौटी पर कसने वाला, सब ओर से सचेत हमारा मन होवे।

मनुष्य को मनुष्य जन्म की सफलता के लिए अपने मन अर्थात् बुद्धि व चित्त को विद्या आदि गुणों से युक्त करना चाहिए। पुरुषार्थ के द्वारा निरन्तर मन के विकास से विद्या व प्रकाश की प्राप्ति करनी चाहिए। हमारा मन, बुद्धि, चित्त व अहम् सदा उत्तम कर्मों की प्रवृत्ति व स्मृति, शुभ कर्मों के अनुष्ठान के लिए सौ वर्ष से अधिक जीने और प्राण व परमात्मा को देखने के लिए ही दिया गया है। इस प्रकार अन्तःकरण का अभिप्रायः है-

मन- मनन विचार विमर्श कने वाला दैव मन।

बुद्धि- ज्ञान का अर्जन, निर्णय करने वाला यक्ष मन

चित्त- चिन्तन, स्मृति पटल का चित्रकार चेतस् मन

अहम्- आत्मवेत्ता, शाश्वत कर्मशील, अमृत मन।

मनुष्य द्वारा किए गए सभी कर्म-सुकर्म अथवा कुकर्म-मन द्वारा ही इन्द्रियों की सहायता से किये जाते हैं। अतः मन को इन्द्रियों का राजा भी कहते हैं। यह राजा हमारे बंधन और मोक्ष दोनों का कारण हो सकता है। यह मोक्ष की ओर ही चले, इसके लिए मन वशीकरण साधना का सदुपदेश वेद में दिया गया है। मन की शक्तियों का विकास; काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार आदि पर विजय, सत्य शुभ व शिवसंकल्प धारण करना ही मन की साधना है।

यजुर्वेद के ३४ वें अध्याय में मंत्र संख्या १ से ६ के

अन्तर्गत मन को वश में करने तथा उसे सद्विचारों वाला बनाने के लिए अति उत्तम प्रार्थनाएँ दी गई हैं। प्रत्येक मंत्र का अन्तिम चरण है- 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' अर्थात् मेरा मन कल्याणकारी इच्छा वाला, धर्म पर चलने वाला, परमेश्वर की उपासना करने वाला, योगयुक्त चित्त वाला, प्रेरणा युक्त, मोक्षरूप संकल्प वाला तथा सर्वमंगलमय नियमों में प्रवृत्ति वाला होवे।

मन अर्थात् समग्र अन्तःकरण के विकास के लिए साधक का निरन्तर प्रयास व परेश्वर की कृपा दोनों ही अति आवश्यक हैं। आओ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के अनुसार ही अनुपम भावपूर्ण शब्दों में इन मंत्रों के अर्थ व भावार्थ समझें-

१- हे जगदीश्वर! आप की कृपा से जो आत्मा में रहने वाला जीवात्मा का साधन, मनुष्य के विचारों को दूर तक ले जाने वाला, अनेक पदार्थों का ग्रहण करने वाला, श्रोत्र आदि इन्द्रियों को प्रवृत्त करने वाला, जाग्रत अवस्था में दूर दूर भागने वाला और सुषुप्ति में भीतर अन्तःकरण में चला जाने वाला, यह मेरा संकल्प विकल्पात्मक मन कल्याणकारी धर्म संबंधी संस्कार वाला हो। सारांश यह है कि जो साधक परमपिता परमात्मा की आज्ञा का पालन और विद्वानों की संगति से अनेक प्रकार से अपने इस सामर्थ्ययुक्त दैव मन को शुद्ध करते हैं वे जन अशुभ व्यवहार को छोड़कर अपने मन को शुभ व्यवहार में प्रवृत्त कर सकते हैं। यही मन वशीकरण साधना है।

२- हे परमेश्वर! आप की कृपा से ही सदा कर्म धर्मनिष्ठ मन का संयम करने वाले व ध्यान करने वाले विद्वान् लोग अग्निहोत्रादि योग यज्ञ में और विज्ञानसंबंधी व्यवहारों में अत्यंत इष्ट कर्मों को करते हैं। सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभाव वाला और प्राणिमात्र के हृदय में पूजनीय व संस्कारित होने वाला वह मेरा मनन चिन्तन करने वाला यक्ष मन धर्म में प्रवृत्त होवे।

सारांश यह है कि परमेश्वर की उपासना, सुन्दर विचार, विद्या व सत्संग के द्वारा साधक अपने अन्तःकरण को अधर्माचरण से दूर कर धर्म के आचरण में प्रवृत्त करे। शुभ कर्मों को करने के लिए शुभ संकल्पों वाला मन ही

समर्थ है।

३- हे जगदीश्वर! आपके जताने से विशेष ज्ञान का अधिकारी व भण्डारी बुद्धि रूप मन चिर स्मृति का साधन, धैर्यस्वरूप मन लज्जा, भय, शंका आदि भावों का हेतु मनुष्यों के अन्तःकरण में आत्मा का साथी, नाशरहित, प्रकाशस्वरूप मन जिस के बिना संसार का कोई भी काम संभव नहीं, वह मुझ चेतन आत्मा के सब कर्मों का साधन रूप प्रज्ञान मन मंगलकारी परमेश्वर में इच्छा रखने वाला होवे।

सारांश यह है कि मेरा यह ज्ञानयुक्त मन समस्त अन्तःकरण को ज्ञान से प्रकाशित व संस्कारित करके परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाला हो। हम अपने इस अविनाशी अमृत रूप मन को सत्याचरण, धर्माचरण व पक्षपात रहित न्यायाचरण में प्रवृत्त करें। यह मन वशीकरण साधना का तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग है।

४- चौथे मंत्र में परमपिता परमात्मा का उपदेश है कि हे साधक मनुष्यो! मुझ में युक्त हुआ तुम्हारा मन भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत्काल त्रिकालस्थ वस्तुमात्र को जान जाता है। भली भाँति त्रिकालज्ञ हो जाता है। प्रेरक परमात्मा का कथन है कि जिस अन्तःकरण में सात होता- पाँच प्राण, एक आत्मा और एक अव्यक्त (मै स्वयं) ये सात लेने देने वाले हों, उस याज्ञिक मन से ही ज्ञान विज्ञानस्वरूप व्यवहार इस जगत् में विस्तृत किया जाता है। वह हमारा योग युक्त, चेतसु, सचेत मन मोक्षरूप संकल्प वाला होवे।

सारांश यह है कि हमारा सचेत मन योगाभ्यास से सिद्ध हुआ तीनों कालों का ज्ञाता और समस्त सृष्टि (जड़ चेतन) का जानने वाला हो जाता है। यह मन ही ज्ञान कर्म व उपासना का साधक है। इस मन को हम सदैव कल्याणमार्ग का पथिक बनाएँ, परमेश्वर की उपासना में लगाएँ और मोक्ष के अधिकारी बनें। परम याज्ञिक परमेश्वर की भाँति ही हमारा यह सप्तहोता मन स्वयं मोक्ष को प्राप्त कर मनुष्य मात्र के लिए मंगलकारी सिद्ध होवे। इस प्रकार इस अति सुन्दर मंत्र में मन वशीकरण साधना का अमर फल वर्णन किया गया है। शिवसंकल्पों द्वारा वश में किया गया मन ही मोक्ष प्राप्ति का साधन है।

५- जिस मन में जैसे रथ के पहिए के बीच में अरे लगे होते हैं वैसे ही ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद का ज्ञान सब ओर से स्थित है। जिसमें प्राणियों का समग्र सर्वपदार्थ संबंधी ज्ञान सूत में मणियों के समान संयुक्त है। वह मेरा कल्याणकारी मन वेदादि सत्शास्त्रों के प्रचार रूप संकल्प वाला होवे।

सारांश यह है कि जिस मन के स्वस्थ रहने में ही वेदादि विद्याओं का आधार और जिस में सब व्यवहारों का

ज्ञान एकत्र होता है, उस अन्तःकरण को विद्या और धर्म के आचरण से पवित्र करके अन्यों को भी इसका ज्ञान कराना परमेश्वर की आज्ञा है। मन के उक्त गुण व कर्म को धृति मन (धारक मन) की संज्ञा दी गई है। और इसी का विस्तार छठे मंत्र में भी किया गया है।

६- जो मन जैसे सुन्दर चतुर सारथि गाड़ीवान् लगाम से घोड़ों को सब ओर से चलाता है, वैसे ही मनुष्य आदि प्राणियों को यह मन अति शीघ्र इधर उधर घुमाता है। जैसे रस्सियों से वेगवान् घोड़ों को सारथि वश में करता है, वैसे ही नियम संयम में रहने वाला हृदय में स्थित, प्रेरणा से परिपूर्ण, सदा स्वस्थ और अत्यंत वेगवान् वह मेरा मन मंगलमय नियमों में इष्ट होवे।

सारांश यह है कि जो जन अपने अनियन्त्रित मन की मनमानी को मानकर कार्य करते रहते हैं वे मूर्ख कहलाते हैं और विद्वान् जन अपने मन को वश में करके ही व्यवहार में वर्तते हैं। शुद्ध व संयमित मन सुखकारी और अशुद्ध व उच्छृंखल मन दुःखदायी होता है। जीता हुआ मन सिद्धि को और न जीता हुआ मन असफलता को देता है। अतः मनुष्यों को सर्वथा उचित है कि वे मन वशीकरण साधना को अपनाएँ और जीवन में सफल हों।

अब लेख के अन्त में मन के संबंध में एक अति महत्त्वपूर्ण स्पष्टीकरण- शरीर का भाग होने के कारण मन भी जड़ है। जड़ होते हुए भी छोटा मन अथवा बड़ा मन (अन्तःकरण) इतना ज्ञान विज्ञान, गुण व व्यवहार आत्मा (चेतन) व परम चेतन परमात्मा का अनुभव कैसे कर सकता है? इसका सही उत्तर स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी महाराज अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प' में इस प्रकार देते हैं- मन इन्द्रियों की अपेक्षा अत्यन्त सूक्ष्म और शक्तिशाली है और आत्मा के निकट है। वह स्वच्छ सत्ता है, अतएव स्वयं चेतन न होता हुआ भी आत्मा के चैतन्य के प्रभाव को अत्यन्त शीघ्रता से ग्रहण करता है और चेतन की भाँति काम करना आरम्भ कर देता है। इन्द्रियों का केन्द्र मन के नीचे है और मन का आत्मा के नीचे। इन्द्रियों तक इसकी पूरी पहुँच है अतः इन्द्रियों को प्रेरित कर आत्मा की इच्छाओं को पूर्ण कराने का कार्य इसी के द्वारा हुआ करता है।'

सारांश यह है कि यदि हम मन को शिवसंकल्प वाला करके, बुद्धि चित्त व अहम् का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लें तो ऐसे संयमित, नियन्त्रित वशीभूत साधनायुक्त मन द्वारा आत्म अनुभव व परमात्म अनुभव प्राप्त कर आनन्दित हो सकते हैं। परमपिता परमेश्वर ओ३म् हमें शक्ति व सामर्थ्य दें कि हमारे मन व अन्तःकरण सदा शिव व सत्य संकल्पों से भरपूर रहें।

युवा बने रहने के स्वर्णिम सूत्र

□ डॉ मनोहरदास अग्रावत

यहाँ युवा बने रहने के स्वर्णिम सूत्र बताये जा रहे हैं, जिन्हें अपनाकर व्यक्ति दीर्घायु तथा चिर यौवन प्राप्त कर सकता है और 'जीवेम् शरदः शतम्' की कामना पूर्ण हो सकती है।

इस भौतिक युग में मानव मशीन बन गया है, वह हमेशा तनाव, चिंता और कार्य के दबाव में रह रहा है; न सोकर उठने का निश्चित समय है, न नहाने का, न खाने का और न ही सोने का। नशे की लत बढ़ती जा रही है। पान मसाला (तम्बाकू), शराब और सिगरेट फेशन की चीजें हो गई हैं; परिणामस्वरूप लोग जवानी में ही बूढ़े हो रहे हैं; पहले कहा जाता था-साठा सो पाठा। लेकिन अब साठ के हुए कि ऊपर जाने जैसी स्थिति बन जाती है; ३५-४० की आयु में चेहरे की चमक गायब होती जा रही है, कामशक्ति कम और शरीर कमजोर होता जा रहा है; किसी शायर ने कहा है-

तिफली गई अलामते, पीरी अयां हुई।

हम मुन्तजिर ही रह गए, अहदे शबाब के।।

यहाँ युवा बने रहने के स्वर्णिम सूत्र बताये जा रहे हैं, जिन्हें अपनाकर व्यक्ति दीर्घायु तथा चिर यौवन प्राप्त कर सकता है और 'जीवेम् शरदः शतम्' की कामना पूर्ण हो सकती है।

(१) रात में जल्दी सोएं एवं सुबह जल्दी उठें। सदा युवा रहने की आकांक्षा वालों को रात में ९-१० बजे अवश्य सो जाना चाहिये, प्रातः ४-५ बजे जाग जाना चाहिये। स्वप्नदोष के रोगी यह जानते हैं कि स्वप्नदोष रात्रि में अधिक होने के बजाय सुबह ४ बजे के बाद अधिक होता है। अतः ऐसे लोग सुबह ४ बजे उठ जाएं तो स्वप्नदोष नहीं होगा।

(२) प्रातः बिस्तर छोड़ने के बाद कुल्ला करके, शौच जाने से पहले एक गिलास पानी पीना चाहिये। इससे पेट साफ होता है तथा पेट के रोग नहीं होते हैं। इसमें नींबू का रस तथा एक चम्मच शहद मिला लें तो और अच्छा है।

(३) जो लोग शरीर श्रम नहीं करते हैं, उन्हें सुबह-शाम खुली हवा में आधा-एक घंटा टहलना चाहिए। सदा स्वस्थ रहने के लिए टहलना आवश्यक है।

(४) प्रतिदिन दोनों समय शौच के लिए नियत समय पर जाना चाहिए। शौच की हाजत महसूस हो या न हो। शौच जाते समय जोर नहीं लगाना चाहिए।

(५) सुबह उठने के बाद तथा रात में सोने से पहले दाँतों को अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए। ऐसा करने से दाँत मजबूत रहते हैं तथा दंत रोग नहीं होते हैं, पर दाँतों को साफ करने के लिए कभी कठोर ब्रश का उपयोग नहीं करना चाहिए और न अधिक देर तक दाँतों को ब्रश से रगड़ते रहना चाहिए। दाँतों को साफ करने के लिए दो मिनट ब्रश करना पर्याप्त है।

(६) सुबह स्नान के पूर्व धूप में खड़े होकर समूचे शरीर पर सरसों का तेल मलना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। इससे त्वचा को चिकनाई मिलती है तथा शरीर को विटामिन 'डी' प्राप्त होता है, जो हड्डियाँ मजबूत करता है।

(७) प्रतिदिन स्नान करना चाहिए। स्नान से शरीर की बाहरी गंदगी तो दूर होती है। अगर दोनों वक्त (सुबह-शाम) स्नान करना संभव न हो तो सुबह शौचादि कर्मों से निवृत्त होकर नारते या भोजन से पहले स्नान कर लेना चाहिए।

(८) नारता, भोजन आदि नियत समय पर लें। जैसे सुबह का नारता ७-८ बजे, दोपहर का भोजन १२-१ बजे, शाम का अल्पाहार ४-५ बजे, रात का भोजन ७-८ बजे।

(९) नारते या भोजन के तुरन्त पहले या तुरन्त बाद पानी नहीं पीना चाहिए। बीच में थोड़ा पानी पिया जा सकता है।

(१०) एक-एक गिलास करके रोज ७-८ गिलास पानी पीना चाहिए, जो कम पानी पीते हैं उन्हें अक्सर कब्ज की शिकायत रहती है। पानी स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

(११) भोजन खूब चबाकर खाना चाहिए, दाँतों का काम आँतों को न करना पड़े। भोजन को इतना चबाएँ कि तरल हो जाए।

(१२) सुबह के नारते में अंकुरित अनाज (गेहूँ, चना, मूँग) लेना चाहिए। इसमें भिगोये हुए मूँगफली के दाने या मुनक्का मिला सकते हैं। इससे भरपूर पोषण प्राप्त होगा।

(१३) दोपहर-शाम के भोजन में चावल-रोटी कम लेकिन सब्जी अधिक लेना चाहिए। थोड़ा सलाद भी अवश्य लें।

(१४) शाम के अल्पाहार में कोई एक फल या फल का रस लेना चाहिए। मौसम के सभी फल अच्छे होते हैं। अतः

जिस मौसम में जो फल मिले, उसे लें। जैसे अमरूद, सेब, केला, पपीता, संतरा, अनार आदि। फलों का जूस भी लिया जा सकता है।

(१५) हमेशा भूख से थोड़ा कम ही खाएं। यह नहीं कि भोजन स्वादिष्ट है तो पेट भर कर खा लिया जाये। पेट का कुछ हिस्सा हवा, पानी के लिए खाली छोड़ना चाहिए।

(१६) आंवला, गाजर स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभदायक है। आंवला विटामिन 'सी' का भण्डार है। गाजर में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में रहता है। आंवला का सेवन कच्चे चबाकर या चटनी या मुरब्बा बनाकर करना चाहिए। नित्य एक दो आंवले किसी न किसी रूप में खाना चाहिए। उसी तरह पूरे मौसम गाजर या गाजर का रस या गाजर का हलवा खाना चाहिए।

(१७) दूध अमृत है। दूध का सेवन अवश्य करना चाहिए। दूध तुरन्त का दुहा या गर्म करके ठंडा किया हुआ पीना चाहिए। रोज कम से कम एक पाव दूध जरूर पीना चाहिए।

(१८) शाकाहार सर्वोत्तम आहार है। लम्बी आयु और चिर-यौवन की अभिलाषा रखने वालों को शाकाहार ही ग्रहण करना चाहिए। मांसाहार शरीर की प्रकृति के अनुकूल नहीं है।

(१९) तेल-मसाले का सेवन कम से कम करना चाहिए। इससे स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

(२०) चाय, कॉफी का सेवन भी बहुत कम करना चाहिए अथवा नहीं करना चाहिए।

(२१) सिगरेट, पान-मसाला, शराब, गांजा स्वास्थ्य के शत्रु हैं तथा आयु को क्षीण करते हैं। अतः अपना हित चाहने वाले इनका सेवन कदापि नहीं करें। ये सब धीमा जहर हैं।

(२२) मल, मूत्र, भूख, प्यास, नींद, जम्हाई आदि के वेगों को बलात् रोकना नहीं चाहिये। इनको रोकने से कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

(२३) चिंता, क्रोध, शोक, मोह, लोभ, भय स्वास्थ्य के शत्रु हैं। इनसे बचना चाहिए।

(२४) प्रातःकाल उषापान (जल पीना चाहिये) भोजन पश्चात् छाछ (मट्ठा) पीना चाहिए और दिन के अंत में (सायं) दूध पीना चाहिये। ऐसा करने से कोई भी रोग नहीं होता है।

(२५) भोजन के तुरन्त बाद संभोग नहीं करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से खाया हुआ अन्न ठीक से नहीं पचता है तथा पाचन सम्बन्धी रोग हो जाते हैं।

(२६) सप्ताह या दो सप्ताह में एक दिन उपवास अवश्य करना चाहिए तथा उस दिन नींबू पानी या नींबू पानी शहद के अतिरिक्त और कुछ नहीं लेना चाहिए। इससे स्वास्थ्य

ठीक रहता है।

(२७) समूचे शरीर में प्रतिदिन या एक दिन छोड़कर सरसों के तेल की मालिश करना चाहिये। ऐसा करने से शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ बना रहता है तथा परिश्रम जनित थकावट दूर होती है। सिर में मालिश से सिर दर्द दूर होता है, बाल काले, घने व मुलायम रहते हैं। सुखपूर्वक नींद आती है।

(२८) थोड़ा बहुत नियमित व्यायाम, धूप सेवन और खुली हवा में घूमना शरीर को सुदृढ़ बनाने में सहायक है।

(२९) स्त्री-पुरुष को संयम से रहने में जितना शारीरिक लाभ है उतना लाभ और कोई नहीं पहुंचा सकता है।

(३०) प्रतिदिन हंसने और मुस्कराते रहने की आदत आपका व्यक्तित्व निखारेगी और प्रसन्नचित्त रहने से कई रोग दूर होंगे।

(३१) आधुनिक एंटीबायोटिक तथा अन्य औषधियों का सेवन बहुत कम करें या नहीं करें। ये औषधियां प्रतिकूल प्रभावयुक्त होती हैं और एक रोग दबाकर दूसरा रोग उत्पन्न करती हैं।

—मनोहर आश्रम, स्थान-उम्मेदपुर,
पो० तारापुर (जावद), जिला नीमच (म०प्र०)

स्वास्थ्य रक्षक तुलसी

◆कील मुंहासों में तुलसी के पत्ते पीसकर नींबू व मलाई के संग प्रतिदिन उबटन करने से चेहरे से दाग धब्बे व झाईयाँ दूर हो जाती हैं।

◆तुलसी के पत्ते के रस में चीनी डालकर पीने से लू नहीं लगेगी व चक्कर आने पर भी सेवन करने से लाभ होगा।

◆सूजन हो जाने पर तुलसी के पत्तों का लेप करें।

◆मलेरिया में तुलसी के पत्तों की चाय अति लाभदायक है।

◆खांसी में तुलसी के पत्तों का रस शहद व अदरक के रस के साथ बराबर मात्रा में पीना लाभकारी है।

◆जल जाने पर तुरन्त जले हुए भाग पर तुलसी के चार छ पत्ते मसलने पर जलन दूर होगी व छाले भी नहीं पड़ेंगे।

◆सिरदर्द में तुलसी के सूखे पत्तों का चूर्ण शहद में मिलाकर सुबह शाम चाटें।

◆कान में सूजन, घाव, फुंसी हो तो तुलसी के पत्तों का रस हल्का गुनगुना दो तीन बूंद डालने से लाभ होगा।

◆दाद हो जाने पर तुलसी के पत्ते रगड़ें।

◆स्वस्थ और सफेद दाँत पाने के लिए तुलसी और नींबू के रस को मिलाकर दाँतों की मालिश करें। यही रस चेहरे की काँति बढ़ाने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

◆इस की पत्तियों का रस दिल के लिए बहुत लाभकारी है।

जानते हो!

□ आदित्य प्रकाश

- ◆ भारत में पहला डाक टिकट सन् 1852 में छपा था।
- ◆ गरुड़ इंडोनेशिया का राष्ट्रीय पक्षी है।
- ◆ लंका शब्द का अर्थ चमकने वाली धरती है।
- ◆ डालफिन मछली सोते समय भी अपनी आंखें खुली रखती है।
- ◆ बिल्ली, शेर, चीता, बाघ की आंखें रात्रि को हीरे की तरह चमकती नजर आती हैं।
- ◆ 1935 में पांच सूर्य ग्रहण और दो चंद्र ग्रहण लगे थे।
- ◆ सिकन्दर और जूलियस सीजर दोनों को मिर्मा के दौरे पड़ते थे।
- ◆ आधा किलो रुई से 3300 कि० मी० लम्बा सूत काता जा सकता है।
- ◆ एक पेंसिल से 35 मील लम्बी रेखा कागज पर खींची जा सकती है।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रस्तुति : कीर्ति कटारिया बाबू

- ❖वादी- दो प्रश्नों की फीस 100 रुपये? ज्यादा नहीं है? वकील- हाँ, ज्यादा है, अब दूसरा सवाल पूछो।
- ❖विक्की- एक दिन मेरे पापा ने फुटबाल को इतने जोर की किक मारी कि वह दो दिन बाद वापस आई। फौजी- और एक दिन मेरे पापा ने फुटबाल को इतने जोर की किक मारी कि वह एक सप्ताह बाद वापस आई। उस पर लिखा था यदि यह फुटबाल दुबारा चांद पर आई तो वापस नहीं करेंगे।
- ❖डॉक्टर- क्या दवा पी ली थी? मरीज - जी पीली नहीं, काली थी।
- ❖रामधन की माताजी बीमार हो गई। वह उसे लेकर डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने कहा- 'टेस्ट होंगे।' रामधन- हे भगवान! अब क्या होगा! मेरी मां तो बिल्कुल अनपढ़ है।
- ❖जीतू- संसार की सबसे नशीली वस्तु कौन सी है? इन्दु- पुस्तक। जीतू- वह कैसे? इन्दु- क्योंकि पुस्तक आगे रखते ही नींद आने लगती है।
- ❖अध्यापक- मान लो एक मकान में पांच मंजिलें हैं। प्रत्येक मंजिल में 15 सीढ़ियाँ हैं। बताओ, एक व्यक्ति को ऊपर जाने के लिए कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ेंगी?
- कीर्ति- (काफी देर तक सोचकर) जी, सब की सब।
- ❖विक्की- भाई एक लीटर भैंस का दूध देना। दूधवाला- तुम्हारा बर्तन छोटा है। विक्की- तो फिर बकरी का ही दे दो।



प्रहलिका:

□ सुमेधा

- ☺दिखने में फिटकरी सी स्वाद में चखी तो शक्कर सी बताओ मैं कौन सी श्री?
- ☺यहाँ नहीं, वहाँ नहीं। बिकता है बाजार नहीं। छीलो तो छिले नहीं। फोड़ों तो गुठली नहीं।
- ☺हम तो हैं तनिक मनिक, तुम कितने हो बड़े। हमने तो मजाक किया, सचमुच रो ही पड़े।
- ☺सिर काटो तो बात बनावें पैर कांट दो दवा बतावें।
- ☺लोहे का है एक मकान उसमें नीचे एक जवान। पानी पीकर जीता है सबको टंडक देता है।

मिसरी, ओला, कांटा, दवात, कूलर,

विचार कणिका: □ प्रतिष्ठा

- ❖जिन्दगी कितनी भी बड़ी हो, वक्त की बरबादी से जितनी चाहे छोटी बनाई जा सकती है। -जानसन
- ❖जिन्दगी का हर कदम सिखलाता है कि कितनी सावधानी की जरूरत है। -गेटे
- ❖आलस्य जीवित मनुष्य की कबर है। -कूपर
- ❖अवगुण, नाव के पेंदे के छिद्र के समान है, जो छोटा हो या बड़ा एक दिन नाव को जरूर डुबो देगा।- कालीदास
- ❖हर अच्छा काम पहले असम्भव नजर आता है। -कालाइल
- ❖जिस समय कोई व्यक्ति किसी की दासता स्वीकार करता है, उसकी आधी योग्यता उसी समय नष्ट हो जाती है। -ओडेसी
- ❖साहस गया कि आधी समझदारी भी गई। -एमर्सन
- ❖आनन्द मिलता है अपनी शक्तियों को काम में लगाने से। -अरस्तू

नम्रता का पाठ

एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन नगर की स्थिति का जायजा लेने के लिए निकले। रास्ते में एक जगह भवन का निर्माण कार्य चल रहा था। वे कुछ देर के लिए वहीं रुक गए और वहां चल रहे कार्य को गौर से देखने लगे। कुछ देर में उन्होंने देखा कि कई मजदूर एक बड़ा-सा पत्थर उठा कर इमारत पर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। किंतु पत्थर बहुत ही भारी था, इसलिए वह इतने मजदूरों के उठाने पर भी उठ नहीं पा रहा था।

ठेकेदार उन मजदूरों को पत्थर न उठा पाने के कारण डांट रहा था पर खुद किसी भी तरह उन्हें मदद देने को तैयार नहीं था। वॉशिंगटन यह देखकर उस ठेकेदार के पास आकर बोले, 'इन मजदूरों की मदद करो। यदि एक आदमी और प्रयास करे तो यह पत्थर आसानी से उठ जाएगा।' ठेकेदार वॉशिंगटन को पहचान नहीं पाया और रौब से बोला, 'मैं दूसरों से काम लेता हूं, मैं मजदूरी नहीं करता।'

यह जवाब सुनकर वॉशिंगटन घोड़े से उतरे और पत्थर उठाने में मजदूरों की मदद करने लगे। उनके सहारा देते ही पत्थर उठ गया और आसानी से ऊपर चला गया। इसके बाद वह वापस अपने घोड़े पर आकर बैठ गए और बोले, 'सलाम ठेकेदार साहब, भविष्य में कभी तुम्हें एक व्यक्ति की कमी मालूम पड़े तो राष्ट्रपति भवन में आकर जॉर्ज वॉशिंगटन को याद कर लेना।'

यह सुनते ही ठेकेदार उनके पैरों पर गिर पड़ा और अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगने लगा। ठेकेदार के माफी मांगने पर वॉशिंगटन बोले, 'मेहनत करने से कोई छोटा नहीं हो जाता। मजदूरों की मदद करने से तुम उनका सम्मान हासिल करोगे। याद रखो, मदद के लिए सदैव तैयार रहने वाले को ही समाज में प्रतिष्ठा हासिल होती है। इसलिए जीवन में ऊंचाइयां हासिल करने के लिए व्यवहार में नम्रता का होना बेहद जरूरी है।' उस दिन से ठेकेदार का व्यवहार बिल्कुल बदल गया और वह सभी के साथ अत्यंत नम्रता से पेश आने लगा। प्रस्तुति : **संजय चुघ**

बाल कहानी

अच्छा अवसर

एक राजा था। किसी काम में उसका मन नहीं लगता था। वह हर समय किसी अच्छे अवसर की तलाश में लगा रहता था, पर अच्छा अवसर कभी उसके हाथ नहीं आया।

एक दिन वह अकेला ही किसी अच्छे अवसर के चक्कर में सोचता शहर से दूर चला गया। जंगल में उसे एक साधु की कुटिया नजर आयी। वह कुटिया के पास गया। उसने देखा कि साधु कुटिया के सामने की जमीन में क्यारियाँ बनाकर उनमें फूल लगा रहा है। उसने साधु को प्रणाम किया और पूछा-“बाबा, कृपया बतलाइए कि मेरे लिए अच्छा अवसर कब आएगा?”

साधु ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपना काम करता रहा। जब कोई उत्तर नहीं मिला तो राजा अपने महल वापस लौट आया। दूसरे दिन राजा फिर साधु

के पास गया। वहाँ जाते ही राजा ने अपना प्रश्न फिर से दुहराया। लेकिन साधु आज भी कुछ नहीं बोला। वह आज भी क्यारियों में लगे फूल के पौधों में पानी दे रहा था।

राजा ने मन-ही-मन सोचा- 'आज कुछ भी हो, मैं अपने प्रश्न का उत्तर लेकर ही जाऊंगा।' वह वहीं बैठ गया। शाम को जब साधु हाथ धोकर उठा, तो राजा ने फिर प्रश्न दोहराया।

साधु राजा का प्रश्न सुनकर हंसने लगा। वह बोला- “राजन, मैंने तो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कल ही दे दिया था। जब काम सामने आ जाए तो उसे तुरन्त पूरा करना ही सबसे अच्छा अवसर होता है। काम में जुटे रहने से सारे काम ठीक समय पर हल हो जाते हैं।”

यह सुनकर राजा की आंखें खुल गयीं।

-दुर्गाशंकर त्रिवेदी

अपना ऊंचा नाम करो

टोका टाकी ठीक नहीं,
खामोशी से काम करो।
सुबह सवेरे उठकर के,
श्रेष्ठजनों को नमन करो।
सैर करो, खेलो-कूदो,
और थोड़ा व्यायाम करो।
ठंडे-ठंडे पानी से,
रोजाना स्नान करो।
दूध-दही तुम ज्यादा खाओ,
और चाय का त्याग करो।
समय पर स्कूल पहुंचो,
गुरुजनों को प्रणाम करो।
छुट्टी में घर आकर,
थोड़ा-सा विश्राम करो।
दोपहर को भोजन के बाद,
स्कूल का काम करो।
शाम को कुछ खेलो,
घर का भी कुछ काम करो।
कभी अधूरा मत छोड़ो,
पूरा अपना काम करो।
सभी को अपना भाई समझो,
वैरभाव का त्याग करो।
पढ़ो लिखो देशभक्त बनो,
अपना ऊंचा नाम करो।
-अर्जुन जग्गा

भजनावली

दुनिया दुःखी फिरै रानी

□ पण्डित जगदीश चन्द्र वत्स

प्रस्तुति : अमित सिवाहा



सुख थोड़े, दुःख घणे जगत में, भोगे कष्ट सरैं राणी।
किस-किस के दुःख दूर करूं, या दुनिया दुखी फिरे राणी
खेत उगाला, माह में पाला, खुंडा फाला दुःखी करे।
थोथा नाला, आवे तिवाला, बिगड़ा ताला दुःखी करे।
पाहं मैं छाला, दाल मैं काला, आँख मैं जाला दुःखी करे
भीत मैं आला, पछीत मैं खाला, घर मैं साला दुःखी करे
एक खर्च कुढाला दुःखी करे, नित कर्जा दुखी करे राणी॥११
नार बिना भर्थाँर दुःखी, घर बार खान दुःख की दीखै
यार बिना दिलदार दुःखी, लाचार खान दुःख की दीखै
साहूकार बिना सरकार दुःखी, जमीदार खान दुःख की दीखै
प्यार बिना परिवार दुःखी, घरबार खान दुःख की दीखै
संसार खान दुःख की दीखै, कोए जन्मे, कोए मरै राणी॥१२॥
कीड़ी कण बिन हाथी मण बिन नागन फण बिन दुःखी रहै
विसनी विसन बिन, इंद्रि मन बिन, भूखा अन्न बिन दुखी रहै
बाँझ जनन बिन, चकवी मिलन बिन, सती सजन बिन दुखी रहै
योद्धा रण बिन, केहरी बण बिन, निर्धन धन बिन दुखी रहै
एक पक्षी गगन बिन दुखी रहै, जब पिंजरे आन घिरे राणी॥१३॥
मात कुलक्षनी, मूर्ख बेटा, फूहड़ नारी दुःख देवा
बाप कै मौसी, बुरा पडोसी, ओछी यारी दुःख देवा
बुरे की संगत, जुआ जामनी, चोरी जारी दुःख देवा
पट बिन खेती, फसल पछेती, कोडी क्यारी दुःख देवा
सभी बीमारी दुःख देवा, नित चिंता चित्त को चरै राणी
रेत की भींत, झील की बस्ती, गली में चोडा दुखी करै
कडवल भैंस, बोलनी ऊंटनी, बलध लतोड़ा दुखी करै
खोरी झोटा, सांड मारणा, अड़ियल घोडा दुखी करै
बाट दूर की, बोझा भारी, जाथर थोडा दुखी करै
एक रग पै फोड़ा दुखी करै, कदे फूटे कदे भरै राणी॥१४॥
गरीब सताणा, जुल्म कमाणा, ताप मैं नहाणा दुखी करै
दूर सिमाणा, पैदल जाणा, वजन उठाणा दुखी करै
सहम उलाहणा, धोखा खाणा, गाम मैं थाणा दुखी करै
लाग्ये लाणा, बैर पूराणा, ज्यादा खाणा दुखी करै
एक सुर बिन गाणा दुखी करै, बस न्यून जगदीश डरै राणी॥१५॥

ओ३म् ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किंच जगत्यां जगत्
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृध कस्यस्विद्धनम्॥

अजर अमर अविनाशी ईश्वर वेद हमें कहता है।

वह परमेश्वर इस दुनिया के कण कण में रहता है॥

जो मानव उस परमेश्वर की सत्ता का ज्ञाता है।

द्वेष भाव को त्याग वही समभावी हो जाता है॥

अपने और पराए का फिर भेद नहीं रहता है॥१॥

कोई मानव उससे छुपकर पाप नहीं कर सकता।

हर पल दृष्टि गढ़ाए रहती है उसकी व्यापकता।

अतः आस्तिक पाप पंक में कभी नहीं बहता है॥२॥

जग में रहकर खूब कमाओ खाओ खूब चाव से।

लेकिन कुण्डली मार न बैठो भोगो त्याग भाव से॥

आसक्ति को छोड़ के नर दुःख द्वंद्व नहीं सहता है॥३॥

चाहे थोड़ा खाओ लेकिन मेहनत करके खाओ।

औरों का धन देख देखकर मत मन में ललचाओ॥

सुख पाता जो सदा 'समर्पित' वेद ज्ञान गहता है॥४॥

ईश्वर सिद्धि

देख दया उस परमेश्वर की जिसने जगत् रचाया।

पत्ता पत्ता समझाता तेरे नहीं समझ में आया॥

रोज सवेरे सूरज निकले किसने आग लगाई।

सर्दी गरमी बारिश और ये किसने बसंत बनाई॥

चांद सितारे घड़ दिए किसने किसने धरण रचाई।

गर अब भी ना समझा तो फिर तेरी समझ है भाई॥

वृक्ष बीज में, बीज वृक्ष में, दीखे नहीं दिखाया॥१॥

सुख तो तू भोग्या चाहवै पर दुःख ना भोगना चाहता।

कौन भला हत्या करके खुद फांसी पर चढ़ जाता॥

न्याय व्यवस्था से ईश्वर अपनी शक्ति दिखलाता॥

सुख दुःख भोग रहे हैं प्राणी कौन इन्हें भुगवाता।

जिसने जैसा कर्म किया है वैसा ही फल पाया॥२॥

है तेरा स्वभाव तू खाता, पीता है, सोता है।

सुख में तू खुश हो जाता है, दुःख मिलते रोता है॥

पर नैमित्तिक ज्ञान सिखाए बिना नहीं होता है।

मात पिता और गुरुजनों का आभारी होता है॥

मात-पिता गुरुओं ऋषियों को किसने ज्ञान बताया॥३॥

नजर ठीक कर कण कण में तुझे ईश नजर आवैगा।

गहरे पानी पैटेगा जो वो मोती पावैगा।

उसकी रचना देख रचयिता सारी समझावैगा।

चित्त की वृत्ति रोक शोक का सागर तर जावैगा॥

बिना किये सहदेव किसी ने दुनिया में क्या पाया॥४॥

-सहदेव समर्पित

पुस्तक परिचय

शीर्षक : भारत एक खोज :

हमने क्या खोजा?

भारत या इंडिया?

लेखक: श्री राजेश आर्य (आर्टा)

पृष्ठ संख्या: 88

मूल्य: ४०/-

प्रकाशक: शान्तिधर्मी प्रकाशन,
जींद (हरियाणा)



समीक्षक : राजेश आर्य मौरवी (गुजरात)

श्री राजेशार्य 'आर्टा' इतिहास के गंभीर अध्येता हैं। लगभग 23 वर्षों से विख्यात पत्र-पत्रिकाओं में आपके प्रायः समीक्षात्मक सहस्रों लेख व कविताएं प्रकाशित हो रही हैं। आप प्रस्तुत पुस्तक के अलावा 'हिन्दू इतिहास : वीरों की दास्तान', 'स्वाभिमान का प्रतीक मेवाड़' आदि इतिहास की भ्रामक अवधारणाओं को खण्डित करने वाली ख्यातिप्राप्त पुस्तकें लिख चुके हैं।

बहुत काल तक देश के दिलो दिमाग पर छाये रहने वाले पं० जवाहरलाल नेहरू ने एक इतिहासकार न होते हुए भी 'Discovery of India' (भारत एक खोज) लिखकर इतिहास के क्षेत्र में टांग अड़ाने की चेष्टा की और भारतीय इतिहास की उन विकृत अवधारणाओं की पुष्टि कर दी, जिन्हें इस देश के इतिहास को जानबूझकर प्रदूषित करने वाली जमातें प्रचारित कर रही थीं। श्री नेहरू की इस पुस्तक 'Discovery of India' (भारत एक खोज) को बाद में शिक्षण संस्थाओं में घुसेड़कर इसका महिमामण्डन किया गया और इतिहास प्रदूषण की प्रवृत्ति को वेग मिला। इस पुस्तक के साथ श्री नेहरूजी का नाम जुड़ा होने के कारण उसका इतना प्रचार हुआ कि आनेवाली पीढ़ियों को वही बातें सत्य प्रतीत होने लगीं। लेकिन विद्यार्थियों को देश के प्राचीन गौरव, स्वाभिमान, इतिहास और आदर्शों की शिक्षा देने वाले शिक्षकों का इतिहास के क्षेत्र में होने वाले इस भ्रामक प्रचार से आहत होना स्वाभाविक है। श्री राजेशार्य आर्टा ने इस पुस्तक की प्रामाणिक समीक्षा लिखकर इतिहास की सच्चाई प्रस्तुत कर दी है।

दश अध्यायों में विभक्त इस समीक्षात्मक पुस्तक 'भारत एक खोज : हमने क्या खोजा? भारत या इंडिया?' में सुयोग्य लेखक/समीक्षक ने सैंकड़ों भ्रामक अवधारणाओं से भरपूर श्री नेहरू की पुस्तक 'Discovery of India' (भारत एक खोज) के पचास भ्रान्तिपूर्ण स्थलों को चुना है और उन स्थलों पर ऐतिहासिक तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर अपनी समीक्षा प्रस्तुत की है। इतिहास

के विषय में ऐसी भ्रान्तियां केवल नेहरू-काल में ही प्रसार-प्राप्त नहीं थीं, वे तो वर्तमान 'स्वाधीन' भारत के 'उच्च-शिक्षित' वर्ग में भी सर्वत्र पाई जाती हैं। इन भ्रान्तियों में एक भ्रान्ति यह भी है कि भारतवर्ष में प्रायः पांच सौ वर्ष तक राज्य करने वाले विविध मुस्लिम साम्राज्य वस्तुतः विदेशी आततायी-जेहादी तन्त्र नहीं, प्रत्युत स्वदेशी स्वराज्य ही थे और श्री नेहरू इस भ्रान्ति का प्रचार-प्रसार करने वालों में अग्रगण्य थे!! इस पर सशक्त लेखनी के धनी लेखक और इतिहासकार स्व० सीताराम गोयल जी लिखते हैं, 'अंग्रेज इतिहासकारों की पुस्तकों से नकल उतारकर और उस नकल के ऊपर मार्क्सवाद का मुलम्मा चढ़ाकर उन्होंने 'Glimpses of World History' नाम की पुस्तक में भारतवर्ष के इतिहास की एक कपोल-कल्पित कहानी भी लिख मारी है। इस नानी-की-कहानी के अनेक संस्करण छप चुके हैं और चतुर चाटुकारों ने उनको एक 'गम्भीर इतिहासवेत्ता' के पद पर प्रतिष्ठित करके इस सर्वथा हास्यास्पद ऊटपटांग पुस्तक को इस देश के विश्वविद्यालयों में एक सन्दर्भ-ग्रन्थ के रूप में निर्दिष्ट कर दिया है।- ('शक्तिपुत्र शिवाजी', पृ०2)

लेखक श्री राजेश आर्य (आर्टा) की इस पुस्तक में न तो किसी की व्यक्तिगत आलोचना की गयी है और न इसमें कोई राजनीति है। इस ग्रंथ में ऐतिहासिक तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर असत्य इतिहास की निष्पक्ष समीक्षा मात्र है। यदि अपने देश से प्यार करना और अपने ऐतिहासिक गौरव की रक्षा का प्रयास करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है तो लेखक ने मात्र इस कर्तव्य का निर्वहन किया है।

भारतवर्ष के वास्तविक इतिहास को जानने में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए श्री राजेश आर्य (आर्टा) की यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी। इसके अलावा, वर्तमान में भी भारत के इतिहास को विकृत रूप में प्रस्तुत करने वाले छद्म सेकुलरवादी जमात के इतिहासकारों, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, मिडियाकर्मियों, पोलिटिशियनों, फिल्मकारों आदि का वास्तविक चेहरा बेनकाब करने में भी यह शोधपूर्ण पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक प्राप्ति स्थान:

शान्तिधर्मी कार्यालय

शिवपुरी कोलोनी, नरवाना मार्ग, जींद-१२६१०२ (हरि)
shantidharmijind@gmail.com

वरिष्ठ अधिवक्ता सच्चिदानन्द आचार्य दिवंगत

बीकानेर, नगर आर्यसमाज के पूर्व प्रधान व वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सच्चिदानन्द जी आचार्य का देहावसान दिनांक 4/5/18 की प्रातः हृदयाघात से हो गया जबकि अभी दिनांक 4/3/18 को उनके ओजस्वी उद्बोधन की अमिट छाप हृदय पटल पर अंकित है। प्रधान महेश आर्य ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का उल्लेख करते हुये कहा कि अभी आचार्य जी का दिनांक 4/3/18 को यहां पधारना हुआ तो उन्होंने संबोधित करते हुए कहा था कि 'संकट के समय घबराना नहीं चाहिए और उसका धैर्य से मुकाबला करना चाहिए।' उन्होंने कहा था कि जब गंगाशहर रोड स्थित बैंक भवन के निर्माण के समय अनेकानेक कठिनाईयां आई थी और वर्तमान में भी जो भवन बनाने में मुसीबतें आई हैं इसका भी समाधान निकलेगा। स्मरण रहे नगर आर्यसमाज की स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में आपके पिताश्री स्वर्गीय रामदेव जी का आर्यसमाज स्थापना (सौ वर्ष पूर्व) अमूल्य

योगदान रहा और तत्परचात सन १९७५ से २००० तक आपकी सक्रिय भूमिका रही और अनेक बार अनेक पदों को आपने सुशोभित किया। आपकी सूझबूझ और पुरुषार्थ का ही फल है कि यह बैंक भवन बन सका और आज हम न केवल आत्म निर्भर हैं बल्कि महर्षि दयानन्द मार्ग स्थित स्थान पर भव्य भवन बनाने के लिए सक्षम हो सके हैं, यह बात हमेशा स्मरणीय रहेगी। आप तन, मन, धन से समर्पित रहे। रेकार्ड बताता है कि भवन निर्माण के समय १९९० में आपने २५००० रुपये का सात्त्विक दान दिया। वरिष्ठ सदस्य श्री तुलसी राम जी ने कहा कि वे होनहार, निर्भीक व कर्मठ कार्यकर्ता थे। श्री नरसिंह जी सोनी ने कहा कि वे उच्च कोटि के वकील थे, आर्य समाज के अनेक मुकद्दमे जिताये। यह भवन उन्हीं की देन है। श्री धर्मवीर जी, रामकिशन जी, श्रीमती रूपादेवी जी, उषादेवी जी आदि ने भी उनके कार्यों पर प्रकाश डाला।

—महेश आर्य प्रधान व समस्त सदस्य गण
आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग बीकानेर (राज)

जींद में तीन दिवसीय वेद प्रचार

जींद में १ जून से तीन दिवसीय वेदप्रचार समारोह का आयोजन आर्यसमाज जींद जंक्शन द्वारा किया जा रहा है। उत्सव में आर्यजगत् की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती संगीता आर्या व श्री दीपक आर्य पधारेंगे। इनके अतिरिक्त राष्ट्रीय ख्याति के वेदोपदेशक आचार्य हरिप्रकाश जी मथुरा वेद प्रवचन करेंगे। आर्यसमाज के मंत्री मा० पृथ्वीसिंह ने बताया कि प्रतिदिन दो सभाओं में भजन प्रवचन होंगे। प्रतिदिन यज्ञ का आयोजन भी किया जायेगा।

श्रुति धाम कन्या गुरुकुल

भड़ताना (जींद)

(दूरभाष- 98129 24035)

- ❖ शिक्षा स्वास्थ्य एवं चरित्र निर्माण का केंद्र
 - ❖ पांचवी से ९ वीं कक्षा तक प्रवेश आरंभ
 - ❖ शुद्ध एवं सुसंस्कारित वातावरण
 - ❖ छात्राओं के भोजन के लिए जैविक अन्न व गौ दुग्ध की उत्तम व्यवस्था।
 - ❖ गुरुकुल चोटीपुरा से शिक्षित-शिक्षिकाएं
 - ❖ प्रवेश परीक्षा के आधार पर होगा
- संस्थापक प्रबंधक
आचार्य आत्म प्रकाश जी डॉक्टर सुमेधा जी एवं
कुलपति गुरुकुल कुंभाखेड़ा डॉक्टर सुकामा जी
हिसार कन्या गुरुकुल चोटीपुरा

टांटिया विवि में अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार

श्रीगंगानगर। हनुमानगढ़ रोड स्थित टांटिया विश्वविद्यालय में गत १२ मई शनिवार को टांटिया विश्वविद्यालय एवं गुणराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी, भिवानी (हरियाणा) के संयुक्त तत्वावधान में 'समावेशी और गुणात्मक शिक्षा : चुनौतियां एवं मुद्दे' विषय पर एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार का उद्घाटन कार्यक्रम की मुख्य अतिथि टांटिया विश्वविद्यालय की चेयरपर्सन श्रीमती सुनीता टांटिया ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ० एम०एम० सक्सेना ने की। सेमीनार में डॉ० ललिता जोगड़, डॉ० अंजू बाला, डॉ० धनंजय चौहान, डॉ० नीलम दहिया, डॉ० नरेश सिहाग एवं डॉ० प्रतिभा ने अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर टांटिया विश्वविद्यालय के प्रशासनिक निदेशक डॉ० अश्विनी गोगिया, कुलसचिव डॉ० विनोद शर्मा तथा विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता एवं व्याख्याता उपस्थित रहे। सेमीनार के संयोजक डॉ० राजेन्द्र कुमार गोदारा ने बताया कि इस सेमीनार में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि राज्यों के विभिन्न शिक्षाविदों ने भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किए। डॉ० रेखा सोनी ने कार्यक्रम में उपस्थित हुए सभी आगंतुकों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। (निप्र)

ग्राम दुधवास, जिला खंडवा(मध्य प्रदेश) में हुआ त्रिदिवसीय कार्यक्रम नवीन आर्यसमाज की स्थापना। आर्यसमाज मंदिर निर्माणार्थ आधा एकड़ भूमि का मिला दान प्रसिद्ध साधक संन्यासी स्वामी अमृतानंद जी महाराज की जन्म भूमि नर्मदा नदी के पावन तट पर ग्राम दुधवास जिला खंडवा (मध्य प्रदेश) है। श्री कैलाश पालीवाल जी व कुछ धार्मिक जनों ने मिलकर एक वेदकथा सत्संग का आयोजन करवाया। त्रिदिवसीय प्रोग्राम में प्रथम दिवस पूरे ग्राम में शोभा यात्रा निकली गई और पंच कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया। गर्मी की अधिकता होने के बाद भी सत्संग पंडाल में सैंकड़ों माताओं बहनों भाईयो की उपस्थिति देखी गई। ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारी सत्यवीर (सत्येन्द्र) जी प्रातः योग प्राणायाम की कक्षा लेते थे। ऋषि उद्यान गुरुकुल के ब्र० निरंजन जी व ब्र० सत्येन्द्र जी ने भी सुन्दर उपदेश किये। स्वामी अमृतानंद जी के ज्येष्ठ पुत्र लातूर महाराष्ट्र डा० अखिलेश शर्मा जी ने भी अंतिम दिन न केवल सपरिवार अपनी उपस्थिति दर्ज की अपितु प्रेरणास्पद व्याख्यान भी दिया। प्रति सत्र में आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी लगभग 1 घंटे तक वेदोपदेश करते थे, जिनमें उपनिषद व वेदों के उद्धरण लेकर अनेक सिद्धांतों की चर्चा होती थी। एक दिन अवसर देखकर पुरुषार्थी जी ने आर्यसमाज मंदिर बनाने के लिए भूमि के दान का सभी से आग्रह किया। देव प्रेरणा से एक कृषक सज्जन श्री रामलाल यादव आगे आये और आधा एकड़ भूमि दान देने की घोषणा कर दी। स्थानीय भारतीय जनता पार्टी के विधायक देवेन्द्र वर्मा जी ने भी एक दिन दोपहर की सभा में आकर सहयोग का आश्वासन दिया। 14 मई सोमवार को प्रातः आचार्यप्रवर पुरुषार्थी जी ने आर्यसमाज की कार्यकारिणी का गठन कर दिया और पूर्व सरपंच श्री हीरालाल जी को अध्यक्ष, श्री कैलाश पालीवाल जी को मंत्री और कोषाध्यक्ष श्री पंढरी यादव जी को मनोनीत कर दिया। इसके साथ ही लगभग 32 भद्र पुरुषों व बहनों को भी इस संगठन से जोड़ दिया। सभी को आर्यसमाज व वैदिक धर्म के सिद्धांतों को तन मन धन से स्वजीवन, परिवार व ग्राम में उतारने व वर्धन का संकल्प दिलवाया। आर्यसमाज का रविवासरय सत्संग हर सप्ताह करने और प्रतिवर्ष ऐसा ही बृहत् सत्संग करवाते रहने का आग्रह किया जो सभी ने स्वीकार किया। सभी अतिथियों के रुकने व भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था हीरालाल जी के निवास स्थान में की गई थी।

—कैलाश पालीवाल मंत्री आर्यसमाज दुधवास, जिला खंडवा

शांतिधर्मी एवं गुगनराम सोसायटी (रजि.) की एक ओर प्रस्तुति

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबन्ध, प्रौद्योगिकी,
विधि की द्विभाषीय षट्मासिक राष्ट्रीय पत्रिका

पत्रिका वर्ष में जून व दिसम्बर माह में प्रकाशित होगी। पत्रिका में अपने शोध पत्र प्रकाशन तिथि से एक माह पहले निम्न पतों पर भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

सम्पादकीय कार्यालय :
नरेश सिहाग एडवोकेट
चै. नं. 175, जिला न्यायालय,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
मो. 09466532152

Email ID :
grsbohal@gmail.com

उप कार्यालय :
सहदेव शास्त्री
शिवपुरी, नरवाना रोड़,
जीन्द- (हरियाणा)
मो. 09416253826



Divyanshi Rana received 1st rank in Hindi Poem for Junior category at ASEAN Pravasi Bhartiya Diwas 2018 (Singapore) from high ranking Government dignitaries from India (Smt Sushma Swaraj, Minister for External Affairs) and Singapore (Dr Vivian Balakrishnan, Minister for Foreign Affairs).

महात्मा सत्यानंद मुंजाल एलोपैथिक चिकित्सालय, वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन रोजड की ओर से लालिनोमठ में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। डॉ० राहुलभाई, डॉ० हेताक्षीबेन, उनके सहयोगी निकुंजभाई, अकितभाई, स्नेहाबेन द्वारा ४० मरीजों का ब्लड प्रेशर, डायबिटीज आदि का परीक्षण कर उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया। स्थानीय लोगों द्वारा प्रत्याशित उत्साह दिखाया गया।



ओ३म्

गार्गी वैदिक कन्या गुरुकुल कनियान

ऋषि दयानन्द

ग्राम कनियान जिला शामली, उत्तर प्रदेश (पिनकोड-247771)

गार्गी वैदिक कन्या गुरुकुल कनियान, जिला शामली, उत्तर प्रदेश में कक्षा चतुर्थ से विशारद शास्त्री तक प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। गुरुकुल में स्वच्छ सुन्दर भवन, वैदिक संस्कार युक्त वातावरण, छात्राओं के शारीरिक विकास हेतु पौष्टिक भोजन, दुग्ध हेतु गऊशाला, सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था, सुसज्जित खेल के मैदान व खेल व्यवस्था, कम्प्यूटर शिक्षा व वैदिक व्याकरण आदि सहित आधुनिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था है। कन्याओं के सर्वाङ्गीण विकास के लिए अपनी पुत्रियों को गुरुकुल में शीघ्र प्रवेश दिलायें। स्थान सीमित हैं।

-प्राचार्या
आचार्या निर्मला आर्या
(पूर्व प्रधानाचार्या-आर्य कन्या गुरुकुल, मोर माजरा, हरियाणा)

सम्पर्क सूत्र: 6395370528, 9897499545

हल्दी घाटी का नरकेसरी- (पृष्ठ १९ का शेष)

में अनेक विघ्न बाधाओं का सामना करने, मानसिक एवं शारीरिक वेदनाओं को झेलने के कारण, वर्षों तक बीहड़ों में भटकने के कारण प्रताप की वज्रदेह भी अब शिथिल पडने लगी। इस नश्वर तन का यह परिणाम अत्यन्त कष्टदायक है। इस परिवर्तनशील शरीर का धीरे-२ समाप्ति की ओर जाना स्वाभाविक है। राणा जी का स्वास्थ्य गिरने लगा। अभी उनकी एक और अभिलाषा शेष थी कि जब तक चित्तौड़गढ़ को स्वतन्त्र न करवा लें तब तक चित्त अशान्त रहेगा। अन्ततः वह दिन आन पहुंचा जब तन का यह पिंजरा रिक्त करके प्रस्थान करना ही था। जर्जर काया अब अन्तिम पड़ाव पर आ चुकी थी। राणा ने अपने सहायकों से कहा कि मुझे दुर्ग की उसी प्राचीर पर ले चलो जहाँ से मुझे चित्तौड़गढ़ दिखाई देता है। प्राचीर से अपने प्रिय स्थल चित्तौड़ को निहारती आंखों में अश्रुकण छलक आये। अपने वीरों से कहा- प्रतिज्ञा करो कि जो कार्य मैं न कर सका, तुम अवश्य पूर्ण करोगे। चित्तौड़गढ़ को देखते-२ न जाने कब प्राण पखेरू विदा ले गये।

हे वीर धरा के वीर पुत्र महाराणा प्रताप! तुम्हारी कीर्ति युगों-२ तक वीरों के हृदय में उष्णता का संचार करती रहेगी। तुम्हारे स्वाभिमान का सन्देश आने वाली सन्तानों को देती रहेगी। जब भी कोई तुम्हारी वीर गाथा को पढ़ेगा उसका मस्तक तुम्हारे चरणों की ओर झुकेगा। हल्दीघाटी सदैव तुम्हारे गौरव गान से गुंजित रहेगी। जो भी इस स्थान आयेगा वह चेतक और तुम्हारी वीरता को अपने हृदय पर अंकित करके जायेगा। तुम्हें शत-२ नमन!!

विज्ञान और आस्तिकता-- (पृष्ठ ११ का शेष)

होती है। इससे नियम व व्यवस्था में छिन्न भिन्नता आती है! इसमें विनाश ही होता है! किंतु जब हम सूर्यमाला के ग्रहों/उपग्रहों का अध्ययन करते हैं, तब इनमें छिन्न भिन्नता नहीं बल्कि नियमबद्धता, सुचारुता, सुव्यवस्था, क्रमबद्धता तथा नियमितता दिखाई देती है। ऐसे में भला यह कैसे कहा जा सकता है कि अंतरिक्ष के इन बेजान तथा जड़ पदार्थों से बने इन पिंडों का निर्धारण अकस्मात् ही इस स्थिति में हो गया हो या स्वयं ही इन पिंडों ने अपनी गति और कक्षा का निर्धारण कर लिया हो।

आज विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि सूर्य और सूर्यमाला के ग्रहों की अपनी अपनी धुरी पर घूमने की गति और परिक्रमा की स्थिति इतनी सटीक है कि इनका अध्ययन करके बरसों पीछे और आगे के ग्रहणों की निश्चित

जानकारी प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि इन बेजान पिंडों की चाल और गति में बाल के दस हजारवें हिस्से के बराबर भी कभी कमी बेशी नहीं पाई गई, आखिर इन बेजान पिंडों द्वारा अंतरिक्ष में स्वयं ही क्रमबद्ध सुव्यवस्थित हो जाना क्या अकस्मात् ही कभी संभव है?

क्या विशाल पत्थरों से निर्मित पिरामिडों को देखकर, खजुराहों की गुफा में स्थित मूर्तियों को देखकर कोई कह सकता है कि प्रकृति ने स्वयमेव ही इनका निर्माण कर लिया है! घोर घने जंगल में अव्यवस्थित पड़े पत्थरों के बीच से गुजरते हुए किसी जगह सुव्यवस्थित क्रम में रखा हुआ पत्थरों का टीला देखकर क्या पैर ठिठककर यह सोचने पर मजबूर नहीं करते कि अवश्य ही कभी न कभी किसी चेतन मनुष्य ने इन जड़ पत्थरों को इस क्रम में लगाया है? इन तमाम उदाहरणों से यही साबित होता है कि प्रकृति जड़ है और जड़ में ज्ञान और चेतना न होने से नियमित और सुव्यवस्थित होने का इनका अपना गुण नहीं। चूँकि ब्रह्माण्ड और उसके हर अणु परमाणु में सुव्यवस्था और नियमितता मौजूद है। अतः यही सत्य सिद्धांत है कि चेतना हेतु पिंड में आत्मा और सुव्यवस्था हेतु ब्रह्माण्ड में परमात्मा मौजूद है।

ओ३म्

M- 98964 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ स्पेने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो० रविन्द्र कुमार आर्य

दुकान नं० ६, आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

प्रस्तुति : श्रीनिवास आर्य

विश्व स्वास्थ्य संगठन की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत का हर चौथा किशोर डिप्रेशन का शिकार है। डब्ल्यूएचओ ने बताया कि १० दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में सर्वाधिक आत्महत्या दर भारत में है। 'दक्षिण पूर्व एशिया में किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति कार्रवाई का सबूत' नाम से जारी रिपोर्ट के अनुसार २०१२ में भारत में १५-२९ उम्रवर्ग के प्रति एक लाख व्यक्ति पर आत्महत्या दर 35.5 थी।

अवसाद बन सकता है आत्महत्या का कारण

इस उम्रवर्ग में प्रति एक लाख लोगों पर अनुमानित आत्महत्या दर इंडोनेशिया में 3.6 से लेकर नेपाल में 25.8 है। डब्ल्यूएचओ की दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र की निदेशक पूनम खेत्रपाल सिंह ने कहा कि अवसाद आत्महत्या का कारण बन सकता है और इस क्षेत्र में १५ से २९ वर्ष की उम्र के लोगों के बीच मौत का दूसरा सबसे बड़ा कारण आत्महत्या है। अवसाद से संबंधित स्वास्थ्य सेवाओं को ऐसा बनाना चाहिये जो आसानी से लोगों की पहुंच में हो और उच्च गुणवत्ता की हो।

प्रत्येक चौथा किशोर है डिप्रेशन का शिकार

रिपोर्ट कहती है कि भारत की जनसंख्या 131.11 करोड़ है जिसमें 7.5 करोड़ किशोर हैं और यह कुल जनसंख्या का 5.8 फीसदी है। सात फीसदी किशोरों ने अपने परिवार के सदस्यों, शिक्षकों एवं बड़े लोगों की टिप्पणियों से आहत महसूस किया। रिपोर्ट कहती है कि २५ फीसदी किशोर अवसादग्रस्त, उदास या निराश हैं जबकि ११ फीसदी ज्यादातर समय या हमेशा अपने काम ध्यान नहीं केंद्रित कर पाते हैं। किशोरों में बेचैनी और अकेलापन भी है।

अवसाद का कारण

डब्ल्यूएचओ का कहना है कि आठ फीसदी किशोर चिंता की वजह से बेचैनी के शिकार हैं या वे सो नहीं पाते हैं। इतने ही किशोर ज्यादातर समय या हमेशा अकेलापन महसूस करते हैं। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने माता-पिता के उनके साथ कम घनिष्ठता की शिकायत की। ऐसे बच्चे भारत में २० फीसदी हैं। चार फीसदी किशोर तंबाकू उत्पादों का सेवन करते हैं। जबकि आठ फीसदी शराब पीते हैं।

मानसिक देखभाल विधेयक के बारे में जानें

डब्ल्यूएचओ की दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र की निदेशक पूनम खेत्रपाल सिंह ने मानसिक स्वास्थ्य देखभाल विधेयक के

लिए भारत की प्रशंसा की जिसमें आत्महत्या को अपराध नहीं माना गया और ऐसे व्यक्ति की मानसिक स्थिति का इलाज उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गयी है। सिंह ने कहा- बांग्लादेश, भूटान, इंडोनेशिया, मालदीव और श्रीलंका में हाल के वर्षों में शीर्ष दस स्वास्थ्य प्राथमिकताओं में मानसिक स्वास्थ्य भी एक है। ११ में से आठ सदस्य देशों के पास मानसिक स्वास्थ्य नीतियां या योजनाएं हैं।

डिप्रेशन के लक्षणों पर खुलकर करें बात

डब्ल्यूएचओ की पूनम खेत्रपाल सिंह ने कहा- हम अगर डिप्रेशन जैसे लक्षणों को महसूस करते हैं तो उसके बारे में खुलकर बात करने और इसके संकेतों तथा लक्षणों को बेहतर तरीके से समझकर, खुद की अच्छे ढंग से मदद कर सकते हैं। साथ ही हम अपने सहकर्मियों, दोस्तों और प्रियजनों की, जो अवसादग्रस्त हो सकते हैं, की मदद कर सकते हैं। डिप्रेशन हालांकि सभी आयु वर्ग के लोगों को प्रभावित करता है लेकिन ज्यादातर किशोरों और युवाओं, प्रसव की आयु वाली महिलाओं, खासतौर से बच्चे को जन्म देने के बाद वाली, तथा ६० वर्ष की उम्र से ऊपर के लोगों में यह आम है।

अवसाद के संकेतों को हल्के में न लें

पूनम खेत्रपाल सिंह के मुताबिक अवसाद के संकेतों और लक्षणों में ठीक से नींद ना आना, कम भूख लगना, अपराध बोध होना, आत्मविश्वास में कमी, थकान महसूस होना और सुस्ती शामिल हैं। उत्तेजना या शारीरिक व्यग्रता, मादक पदार्थों का सेवन करना, एकाग्रता में कमी और खुदकुशी करने का ख्याल आना भी इसके लक्षण हैं। इससे उबरने के लिए नियमित तौर पर ऐसे व्यक्ति से बात करना जिस पर वे भरोसा करते हों या अपने प्रियजनों के संपर्क में रहना मददगार हो सकता है।

नशे से दूर रहकर अवसाद से बचा जा सकता है

शराब और नशीले पदार्थों से दूर रहकर अवसाद से बचा जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना के उपलक्ष्य में हर वर्ष सात अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है और हर साल इसके लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अहमियत रखने वाली थीम का चयन किया जाता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसेट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव



ओ३म्

फोन : 01681-252606 (दु.)

9416545538, 7206034250

सत्यम् स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात
आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. सत्यव्रत आर्य सुपुत्र रमेश चन्द्र आर्य

नजदीक सत्यनारायण मंदिर, सुनार मार्किट,
मेन बाजार, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

समर्पण

सेवा

सहयोग

संस्कार

समानता



जनहित विकास परिषद् हरियाणा (रजि.)



द्वारा

5 जून पर्यावरण दिवस, 2018

पर

11 कुण्डीय महायज्ञ



यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म



स्वर्ग कामो यजेत

अध्यक्षता :- महन्त शुक्राई नाथ जी योगी कोय पीतघीश्वर

समय :- प्रातः 8:30 बजे

स्थान :- जयन्ती देवी मन्दिर, जीन्द

चलो हरिद्वार!

ओ३म्

चलो हरिद्वार!!



पाखण्ड खण्डिनी पताका व
गुरुकुल परम्परा की ऐतिहासिक भूमि
गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के परिसर में



अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन

दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018

स्थान : गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार
(विद्यालय विभाग के प्रांगण में)

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार आयोजित
गुरुकुलों के इस महाकुम्भ में भारी संख्या में पहुँचने की
आर्य समाजों, प्रान्तीय सभाओं से अपील!

आप सभी से प्रार्थना है कि भारी संख्या में पधारकर तन-मन-धन से सहयोग करें।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985, ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in



DEV RISHI VIDYA PEETH SR. SEC. SCHOOL

Affiliation No. 8002 | Recognition. 2977

Class 12th Board Examination Result March 2018- Shining Stars

Sakshi
438/500Manju
433/500Chetna
429/500Alish
425/500Monika
407/500Preeti
401/500Aakriti
397/500Pooja
396/500Rekha
393/500Pooja
381/500

Class 10th Board Examination Result March 2018- Shining Stars

Vaibhav
468/500Pinki
455/500Devank
438/500Anjali
436/500Nishu
422/500Sarath
414/500Rohit
413/500Sandeep
411/500Radha
400/500Nancy
399/500Riya
397/500Mohit
391/500Ajay
386/500Subham
384/500Ashish
383/500Sidhant
381/500Priya
375/500Rahul
374/500Pooja
364/500Rahul
331/500Sonu
322/500Priya
312/500

Nandgarh (Julana) M. 9992304035, 9671554500